ज्ञानामृत

अप्रैल, 1984
वर्ष 19 ❋ अंक 10

मूल्य 1.35

जैसे सूर्य की किरणें बीज को विस्फुटित होकर पुष्प-रूप में उगने, बढ़ने और खिलने में सहायक होती हैं, वैसे ही ज्ञान एवं गुण सूर्य परमात्मा शिव भी अपने प्रकाश और शक्ति से मनुष्यात्मा में गुणों के बीज को पुष्पित होने में सहायक होते हैं। अतः यह 'संगम युग' वसन्त ऋतु के समान है जबकि मनुष्य काँटे से 'फूल' बनते हैं और संसार को जंगल से बदल कर एक उपवन बना देते हैं और वातावरण में नम्रता, सन्तुष्टता, सहनशीलता इत्यादि की सुगन्धि छा जाती है।

नई दिल्ली राजोरी गार्डन में नव निर्मित अन्तर्राष्ट्रीय संस्थान का उद्घाटन दृश्य। ब्र० कु० दादी प्रकाशमणी तथा ब्र० कु० चन्द्रमणि जी दीप प्रज्जवलित कर उद्घाटन कर रहे हैं।

मॉरीशस के प्रधानमंत्री महामहिम भ्राता जुगनॉथ जी से ब्र० कु० मोहिनी जी तथा ब्र० कु० चन्द्रा जी ईश्वरीय ज्ञान की चर्चा करते हुए।

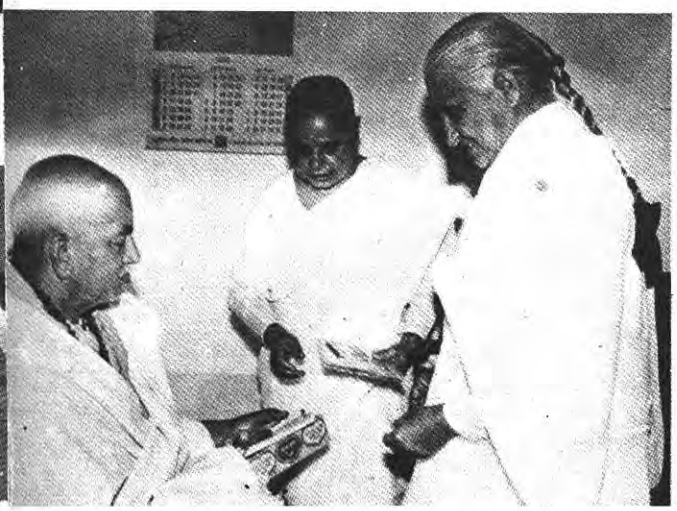

पांडव भवन, माउंट आबू में आचार्य महामण्डलेश्वर स्वामी प्रकाशानन्द, मुख्य श्री जगतगुरु आश्रम कनखल हरिद्वार को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र० कु० दादी प्रकाश मणि जी, मुख्य प्रशासिका ब्र० कु० ई० विश्वविद्यालय।

चन्डीगढ़ में ब्र० कु० दादी प्रकाशमणि जी तथा ब्र० कु० चन्द्रमणि जी राजयोग भवन तथा "म्यूज़ियम आफ़ विज़डम" का शिलान्यास करते हुए।

यू. एन. आई. एस. में पत्रकारों के सम्मेलन को सम्बोधित करती हुई ब्र० कु० जयन्ती जी। साथ में बहन जहां-अल-सादात, भ्राता डा० जेम्ज़ जोनाह तथा ब्र० कु० मोहिनी जी मंच पर उपस्थित हैं।

नेपाल को विदेश मन्त्री माननीय पद्म बहादुर खत्री को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र० कु० परणीता तथा ब्र० कु० लक्ष्मी जी।

मॉरीशस के "खेल तथा युवा" मन्त्री भ्राता एम० ग्लोवर को ईश्वरीय सौगात भेंट करती हुईं ब्र० कु० मोहिनी जी।

यवतमाल में भाजपा के अध्यक्ष भ्राता अटलबिहारी बाजपेई को ईश्वरीय सन्देश देते हुए वहाँ के ब्र० कु० भाई बहनें।

कावली में आयोजित वकीलों के स्नेह मिलन को सम्बोधित करतीं हुई कर्नाटक जोन की इन्चार्ज ब्र० कु० दादी हृदय पुष्पा जी।

आबू रोड सेवा केन्द्र पर बहन मेनका गांधी के पधारने पर उन्हें श्रीकृष्ण का चित्र भेंट करती हुई ब्र० कु० शशी जी।

खानपुर (नई दिल्ली) में एक आध्यात्मिक कार्यक्रम में लोकसभा सदस्य भ्राता सज्जन कुमार उद्‌गार प्रकट करते हुए। उनके दाएं ब्र० कु० सुन्दरी तथा भ्राता रामजीलाल बैठे हैं।

Regd No. 10563/65-D(E)-7(

आबू पर्वत पर इन्गलैन्ड से पधारे नोबल पुरस्कार विजेता प्रो० ब्रेन जोसफ़सन, ब्र० कु० हृदयमोहिनी से 'ईश्वरीय सन्देश' तथा पुष्प लेते हुए।

मंडी में शिवरात्रि के उत्सव पर हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल महामहिम भ्राता कोहिशे जी को ब्र० कु० शीला जी ईश्वरीय भेंट देते हुए।

नागपुर में हुए सर्व धर्म सम्मेलन में (बाएं से) भ्राता अब्दुलकरीम पारेख, जयमलसिंह लांबा, ए० एस० ससोण, बी० के० बसू, ब्र० कु० रत्नमणि, ब्र० कु० आशा बहन, राजकुमार जैन, के० बी० मादन, जिजाताई देशपांडे तथा ब्र० कु० चन्द्रशेखर।

न्युज़ीलैन्ड में लोकसभा अध्यक्ष भ्राता बलराम झाखड़ तथा राज्यसभा अध्यक्ष भ्राता श्यामलाल यादव तथा अन्य ब्र० कु० भावना के साथ दिखाई दे रहे हैं।

सिकन्द्राबाद (आ० प्र०) में हुई प्रैस कान्फ्रेन्स को सम्बोधित करती हुई न्यूयार्क से पधारी ब्र० कु० मोहिनी बहन जी।

शिव शक्ति भवन, श्याम नगर में हुए शिव जयन्ती समारोह में प्रवचन करती हुई दादी निर्मल शान्ता जी।

अमृत-सूची

क्रम सं०	विषय		पृष्ठ
१.	उड़ता स्वतन्त्र पंछी बनो	...	१
२.	मर्यादा (सम्पादकीय)	...	२
३.	दिल्ली में अन्तर्राष्ट्रीय राजयोग संस्थान का उद्घाटन	...	४
४.	इन आँखों ने क्या-क्या देखा	...	५
५.	आप कहाँ चल रहे हैं ?	...	८
६.	सेवा-समाचार (चित्रों में)	...	९
७.	टक्साली मूल्य और भावना का मूल्य	...	१३
८.	खुशी का रहस्य (एकांकी)	...	१५
९.	राजयोग भवन का निमन्त्रण (कविता)	...	१७
१०.	शाहे बेखबर	...	१८
११.	सचित्र समाचार	...	२१
१२.	समय	...	२५
१३.	राजयोग द्वारा सुस्वास्थ्य की प्राप्ति	...	२७
१४.	आध्यात्मिक सेवा-समाचार	...	२९

उड़ता स्वतन्त्र पंछी बनो

(ब्र० कु० दादी जानकी जी की क्लास के कुछ अंश)

उड़ता हुआ पंछी हर एक को अच्छा लगता है। उड़ता हुआ पंछी बहुत उमंग, उल्लास में दिखाई देता है। परन्तु एक पंछी और बोझ ढोने वाले पशु में कितना न अन्तर है। बेचारे पशु को कोई चाबुक मारता, कोई उसकी पीठ पर सवार हो जाता। पशु का जीवन बहुत दूभर है। पंछी को न किसी का बोझ उठाना पड़ता, न ही कोई उसकी पीठ पर बैठ सकता। अतः हम सबको फ्री बर्ड (स्वतंत्र पंछी) बनना है, जेल बर्ड नहीं। एक होते हैं उड़ते स्वतंत्र पंछी और कई होते हैं पिंजरे के पंछी। हमें पंछी को पिंजरे में बंद देख तरस पड़ता है। जब किसी लोभ-लालच में आकर पंछी पिंजरे में फंस जाता है तो हमें उसे देख तरस पड़ता है। इच्छा होती है कि उसे उड़ा दें। हम यही सेवा कर रहे हैं। आत्माएं जो विकारों के वशीभूत पिंजरे में बन्द हो गई हैं हम उन्हें स्वतन्त्र करना चाहते हैं। हम एक दो को उड़ता देख हर्षित होते हैं।

शिव बाबा ने हमें **ज्ञान योग के पंख दिये, हमें पशु से पंछी बनाया।** पशु कैसा भी अच्छा हो उसे बेचारा ही कहा जाएगा। पंछी को बेचारा नहीं कहा जाता। यहाँ-वहाँ से दाणा-कणा लिया और उड़ा, जितना मुंह में डाल सका लिया और उड़ा। पशु को बहुत खाना चाहिये, पंछी को बहुत थोड़ा चाहिये, तो बाबा हमको हल्का बना रहे हैं। एनीमल (पशु) से एन्जिल (फ़रिशता) बनो। सदा उड़ते रहो।

सम्पादकीय

मर्यादा

सतयुगी सृष्टि और कलियुगी दुनिया में एक विशेष और महत्त्वपूर्ण अन्तर यह है कि प्रथम युग में मर्यादा होती है। उस मर्यादा ही के कारण तब परस्पर सम्बन्धों में अनबन पैदा नहीं होती। हर व्यक्ति हर दूसरे के व्यवहार से सन्तुष्ट होता है। कोई किसी की इज्जत पर कभी भी हाथ नहीं डालता। अपमान, निन्दा, आक्रमण, अत्याचार, अनाधिकार चेष्टा, सीमा-उल्लंघन इत्यादि का नाम-निशान नहीं होता। इसी व्यवस्था के बारे में कहा गया है कि 'गाय को भी शेर से भय नहीं होता' और शेर अधिक बलशाली होने पर भी न दुर्व्यवहार करता है और न दूसरों के जीने के अधिकार का अतिक्रमण ही करता है। वहाँ 'जिसकी लाठी उसी की भैंस' की कहावत चरितार्थ नहीं होती बल्कि हरेक के अधिकार हर दूसरे के श्रेष्ठ व्यवहार द्वारा सदा सुरक्षित रहते हैं। उनके कर्मों में अनौचित्य, असभ्यता, अशिष्टता, अभद्रता, अनियमितता या अमंगल भावना कदापि नहीं होती। इसलिए उस समय की दुनिया प्रेम और पावनता की सृष्टि, नेह और नैतिकता का संसार और रास तथा रस का जगत होता है।

अमर्यादा ही दुःख का मूल

इसकी तुलना में कलियुग का संसार ऐसा संसार है जिसमें हाय-हल्ला हो रहा है। बहु सास का सम्मान नहीं करती और सास हर समय बहु को डाँटती-डपटती है। प्रजा सरकार द्वारा बनाए नियमों का उल्लंघन करती और सरकार पुलिस द्वारा प्रजा पर लाठी व गोली बरसाती है। एक-दूसरे का सम्मान, और एक-दूसरे के प्रति कृतज्ञता तथा कर्त्तव्य-पालन के न होने से ऐसी स्थिति पैदा हो गई है कि जिसमें कोई किसी से सन्तुष्ट नहीं। हर कोई हर दूसरे की निन्दा अथवा आलोचना करने में अथवा उसके प्रति मन-मुटाव व्यक्त करने में व्यस्त है। ऐसे वातावरण में न सहयोग है न सहनशीलता और इन सबके परिणाम स्वरूप दुःख ही दुःख है क्योंकि हर कोई हर दूसरे को काँटे की तरह चुभ रहा है। अमर्यादा के कारण ही इस संसार को काँटों का जंगल (Forest of thorns) कहा गया है। आज छोटे-बड़ों का आर्शीवाद अथवा उनसे इजाज़त लेकर काम करने में अपनी स्वतन्त्रता की कमी अनुभव करते हैं। जो समान स्तर के सम्बन्धी हैं, वे एक-दूसरे को सम्मान पूर्वक सूचना देने में अपनी शान और अपनी ऊंचाई में कमी अनुभव करते हैं और हर किसी की जिह्वा पर ये शब्द हैं—

"हम तो उसे पूछते ही नहीं; वह कौन होता है ?"...

"हम क्या उससे कम हैं ? क्या हम उसके नौकर हैं जो उससे पूछते रहें ?"...

"नित्य प्रति हम ही उसे नमस्ते कहें, वह अपने को क्या समझती है ?"...

"हमें क्या आवश्यकता है कि हम किसी को बुलाएँ ? जिसने आना हो, आ जाए; नहीं आता तो न आए ?"...

मर्यादा में ही मुख की शोभा और व्यक्तित्व की महानता है

इस प्रकार मनुष्य का मुख 'कमलमुख' नहीं रहा। मुख की शोभा मनुष्य के वचन होते हैं और वो वचन बिगड़ जाने से अथवा मर्यादा नष्ट हो जाने से मनुष्य की सूरत और सीरत दोनों बदल गए हैं। मुख द्वारा पुष्प वर्षा होने की बजाय पत्थर बरसते हैं। अपने सन्मान की भावना अधिक दूसरों को सन्मान (Regard) देने की भावना कम है—ऐसी एक हवा चली हुई है। बड़ों का अभिवादन करना भी छोटे अपनी हतक मानने लगे हैं। वे यह नहीं समझते कि यह भी एक अभिमान का रूप है—ऐसा अभिमान जिसमें घृणा, द्वेष, उच्छृङ्खलता और उद्दण्डता भरे हुए हैं। समकक्ष के लोग भी एक-दूसरे का लिहाज़ नहीं करते, कहा-सुनी में

कोर-कसर नहीं छोड़ते । वे इसे ही स्वतन्त्रता मान बैठे हैं जबकि है वास्तव में ये अनुशासनहीनता । आज सभाओं में भी अनुचित शब्दों का प्रयोग होता है । इसे वे असंसदीय भाषा (Unparliamentary language) कहते हैं । आम बोलचाल में, घर में, गाड़ी में जिस भाषा का प्रयोग होता है, उसकी तो बात ही मत पूछिये । खूब शब्दों का कीचड़ उछाला जाता है ।

जहाँ मर्यादा है, वहाँ कानून की आवश्यकता नहीं

सतयुगी सृष्टि में न विधान सभाएँ होती हैं न विधि-विधान बनाये जाते हैं, न उनको लागू करने वाला गृह मन्त्रालय होता है न पकड़-धकड़ करने वाली पुलिस और न दंड-चंड देने वाले कारावास क्योंकि लोग स्व-अनुशासित हैं और उत्तम मर्यादा वाले हैं । उनमें परस्पर स्नेह है और वे खूब हँसते-बहलते भी हैं परन्तु वे ऐसी हँसी नहीं करते जिससे किसी का दिल दुःखे । न वे ऐसा खेल खेलते हैं जैसे इस कलियुगी सृष्टि में होली के दिन कई खेलते हैं या बन्दूक लेकर जंगल (Game Centuries) में पशुओं और पक्षियों का शिकार करते हैं। वहाँ किसी भी प्रकार की चंचलता और स्वच्छन्दता (Loose activity) है ही नहीं । इसलिए रामायण आदि जैसे ग्रन्थों में आज भी ऐसे उल्लेख मिलते हैं जिनमें यह कहा गया है कि सतयुग और त्रेता में प्रजा स्वशासित (Self-disciplined Self-Governed) होती है । वहाँ कोई दण्ड-संहिता (Penal Code) नहीं होती, न ही दण्ड की आवश्यकता होती है ।

अमर्यादा के पीछे अपवित्रता छिपी है

देखा जाए तो मर्यादा में सभी दिव्य गुण समाए हैं क्योंकि मर्यादा ही नियन्त्रण है, अनुशासन है, संयम है । और पूर्ण नियन्त्रण तथा पूर्ण संयम वहाँ होता है जहाँ मन निर्विकार हो । कामी मनुष्य कामाधीन होता है; वह काम को काबू नहीं कर पाता । क्रोधी सब नियन्त्रण तोड़कर आपे से बाहर हो जाता है । लोभी सरकार द्वारा बनाए नियमों, समाज द्वारा स्थापित मर्यादाओं और डॉक्टरों द्वारा बताई सावधानियों को तोड़कर अन्न आदि के लोभ में विचरता है । मोह वाला मन के काबू को खोकर दूसरे पर लोट-पोट हो जाता है और जिसमें अहंकार है उसका नियन्त्रण तो ऐसे टूट चुका होता है जैसे मद-मस्त हुए हाथी का । नियन्त्रण खो जाने से ही मनुष्य अपराध में प्रवृत्त होता है । अनुशासन गंवा देने से ही मनुष्य तोड़-फोड़ करता है । इस प्रकार मनुष्य को यह समझ लेना चाहिए कि मर्यादा को भंग करना गोया विकारों की भांग पीना है ।

मर्यादा में पवित्रता और सर्वगुण समाये हैं

दूसरी ओर मर्यादा में नियन्त्रण, गम्भीरता, स्वमान और परसम्मान तथा संयम आदि समाए हुए हैं । अपनी जिह्वा पर वही नियन्त्रण कर सकता है जिसका मन पर नियन्त्रण हो । और मन पर नियन्त्रण उसी का होता है जिसकी बुद्धि बलशाली और विवेक युक्त हो । और बुद्धि उसी की बलशाली व विवेक युक्त होती है जिसमें सत्य-असत्य का प्रखर निर्णय हो और जिसमें पवित्रता व तपस्या की शक्ति हो । अतः योगी ही मर्यादा वाला हो सकता है । जो मर्यादा को भंग करता है, वह निश्चय ही भोगी है । या तो उसमें इच्छाएँ और तृष्णाएँ हैं कि जिनको पूर्ण करने और भोगने में वह बड़ों की बात नहीं मानता । समकक्ष वालों का भी लिहाज़ नहीं करता । और संसार में कुरीति फैलने का भी उसको विचार नहीं रहता । मर्यादा-पालन करने वाले के मन में स्वतः ही यह भाव समाया रहता है कि हरेक व्यक्ति महान् है और कि कानून को अपने हाथ में लेना ग़लत है । तिरस्कार करना तिमिर में जाना है और सबका सम्मान करना तथा स्वयं में मान्यता का गुण होना ही महानता है ।

मर्यादा ही से व्यवस्था, अमर्यादा से अनाचार

हम देखते हैं कि सरकार के कार्य में हरेक का अपना-अपना स्थान (Protocol) निश्चित है । इसके अनुसार ही हरेक को मान मिलता है । मान और मर्यादा साथ-साथ चलते हैं । मेजर का स्थान अपना है, 'मेजर जनरल' का अपना और कैप्टिन का अपना । यदि स्थान के अनुसार आज्ञा-पालन और सम्मान न हो तो फ़ौजी अनुशासन या व्यवस्था चल नहीं सकते । इसी प्रकार, सिविल कार्यों में भी हरेक

का अपना-अपना स्थान है। प्रधानमन्त्री और राष्ट्रपति का अलग-अलग स्थान है। राज्य की शोभा इसी में है कि हरेक अपने-अपने कार्य को यथा-अधिकार करे और दूसरों को यथा-स्थान सम्मान दे तथा हर कोई दूसरों से शिष्टतापूर्वक व्यवहार करे। ऐसा स्वाभाविक रूप से न होने के कारण ही संसार में अवैधानिकता (Lawlessness) फैलती है और बढ़ते-बढ़ते अफ़ातफ़री हो जाती है। ऐसी अमर्यादा ही का नाम धर्म-ग्लानि है। धर्म-मर्यादा-पालन सिखाता है। उससे व्वस्था, स्नेह तथा सुचारुता स्थापित होते हैं। अत: परमपिता परमात्मा धर्म-ग्लानि अथवा मर्यादा-ग्लानि के समय अवतरित होकर अनुशासन या मर्यादामूलक धर्म की पुन: स्थापना कराते हैं।

अत: जो मनुष्यात्माएँ ईश्वरीय ज्ञान लेती, योगाभ्यास करती, पवित्र बनने का पुरुषार्थ करती तथा दिव्यगुण धारण करती हैं, उन्हें मर्यादा का भी पूर्ण पालन करना चाहिये क्योंकि हरेक को मर्यादा पुरुषोत्तम भी बनना है और मर्यादा वाली सृष्टि की स्थापना के निमित्त भी। —जगदीश

दिल्ली में अन्तर्राष्ट्रीय राजयोग संस्थान का भव्य उद्घाटन

विज्ञान और आध्यात्म के समन्यवय के उद्देश्य को लिए हुए इस अनोखे दिव्य संस्थान का उद्घाटन भिन्न-भिन्न रंगारंग कार्यक्रमों द्वारा विशाल जन समूह के उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। सुन्दर जगमगाती बिजलियों के प्रकाश द्वारा तथा अद्भुत सुसज्जित संस्थान के इस श्वेत भवन, जिसमें एक मेडिटेशन हाल तथा २२ कमरे हैं, का उद्घाटन अपनी अति प्यारी दादी जी के द्वारा बैंड के मधुर गीतों के ध्वनि के बीच राजोरी गार्डन में रविवार दिनांक २५ मार्च १९८४ को सायं ४.३० बजे किया गया, तत्पश्चात शिव बाबा का ध्वज लहराया गया और पधारे हुए विशेष अतिथियों सहित दादी जी ने दीप जलाये, फिर मंच का कार्यक्रम आरम्भ हुआ, भारत के सभी स्थानों तथा विश्व से भी पधारे हुए जोन इंचार्ज भाइयों और बहनों के प्रेरणादायक संगठन के अतिरिक्त उद्घाटन समारोह में कई विशेष अतिथि और वक्तागण उपस्थित थे। इलैक्ट्रानिक विभाग के केन्द्रीय उपमंत्री भ्राता संजीवी राव जी ने मुख्य अतिथि के रूप में आशा प्रगट की कि यह संस्थान केवल भारत ही नहीं बल्कि सारे विश्व के लिए दिव्य प्रकाश फैलाने वाले लाइट हाउस का कार्य करेगा। जैन सम्प्रदाय के सुविख्यात मुनी नागराज जी ने इस भव्य भवन के निर्माण के लिए पीछे निहित महान उद्देश्य की सफलता के लिए शुभ कामनायें दीं। सनातन धर्म फाऊन्डेशन के प्रधान भ्राता आचार्य प्रभाकर मिश्र जी ने कहा कि दुनिया में केवल यही एक विश्व विद्यालय है जो परमपिता परमात्मा शिव द्वारा प्रदत ज्ञान और सहज राजयोग के द्वारा विश्व भर में पवित्रता, सुख शान्तिमय वातावरण बना रहा है। उन्होंने कहा वह दिन दूर नहीं जब विश्व के कोने-कोने में ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की शाखायें फैल जायेंगी। इस प्रकार चिर प्रतिक्षित दृढ़ विश्वास और विजय का प्रतीक अन्तर्राष्ट्रीय राजयोग संस्थान दिल्ली धरातल पर जगमगाते सितारों के बीच खिले हुए चाँद के समान पवित्रता और शीतलता की किरणें बिखराता हुआ चट्टान के समान खड़ा है।

इन आँखों ने क्या-क्या देखा

ब्र० कु० सूरजकुमार, माउण्ट आबू

"इन आँखों ने देखा शिव को नया जहान बनाते
भूमण्डल पर आ रूहों को, अमृत पान कराते"

सृष्टि चक्र में सत्युग से कलियुग तक मनुष्य ने अनेक दृश्य देखे। कभी वह देवी-देवताओं के आँचल में खेला, तो कभी उनके पूजन में मग्न रहा। कभी उसने सम्पूर्ण सुखमय स्वर्ण काल निहारा, तो कभी वसुन्धरा पर रक्त-सरिता बहते देखा। कभी उसने समस्त विश्व पर शासन किया तो कभी भारत में विदेशी शासकों की अधीनता देखी। मनुष्य असंख्य दृश्य अवलोकन करता हुआ अपनी लम्बी यात्रा तय करके उस दिव्य दृश्य के समक्ष आ पहुँचा है, जहाँ प्रभु स्वयं अपनी दिव्य लीलाएँ कर रहे हैं। जो कुछ शास्त्रों में पढ़ा, वो साकार है, जिसे देखने की इन्तजार थी, वो सम्मुख है।

यों तो मनुष्य ने अनेक सुखदाई दृश्य देखे, परन्तु हम प्रभु के बच्चों ने इस अन्तिम जन्म में क्या-क्या देखा, यहां हम उन आँखों देखे दृश्यों का उल्लेख करेंगे। हमारे साथ वे अनेक आत्माएँ भी निशिदिन अपने सर्वोच्च भाग्य का गुणगान करती हैं जिन्होंने अनेक बार ये अलौकिक दृश्य देखे और जिनका मन इतना मुग्ध हो गया कि पुनः संसार में लिप्त नहीं हुआ।

हमने उस परम सत्ता को धरती पर उतरते देखा—

अनगिनत बार हमने उस परम सत्ता, परम पिता को इस धरती पर उतरते देखा। हमने देखा कि वह परम सत्ता परकाया में प्रवेश करके मनुष्यों की कैसे जन्म-जन्म की प्यास बुझाते हैं। उसने इस धरा पर आकर अलौकिक यज्ञ रचा और हमने अनेक मनुष्य रूपी परवानों को उस यज्ञ में स्वाह होते देखा। अनेकों ने अपना तन, मन, बुद्धि, धन व सर्वस्व उसमें स्वाह कर दिया। और यहीं पर जीवनमुक्त स्थिति प्राप्त की। जो कल्पना का विषय था वो सत्य हो गया। जो तर्क का विषय रहा वो अनुभवों का ख़ज़ाना बन गया।

प्यार के सागर को प्यार लुटाते देखा—

हमने उस प्यार के सागर में सैंकड़ों बार डुबकी लगाकर तो देखा ही परन्तु हमने उस प्यार के सागर को छलकते भी देखा और उसकी छलक से अनेक प्यासी आत्माओं को तृप्त होते भी देखा। इन नयनों से देखा कि भगवान के भी अपने प्यारे वत्सों के प्रेम में नयन छलक जाते हैं। हमने उन्हें रूहों के नयन पोंछते भी देखा और प्यार की दृष्टि देकर संसार भुलाते भी। कितनी भाग्यशाली हैं वे आत्माएँ जिन्होंने प्रभु का साक्षात् प्यार देखा! जिनके सिर पर उनके पितृवत हाथ फिरे, और जिन्हें उन्होंने कृत्य-कृत्य कर दिया। भक्त तो भगवान की एक-एक बूँद के लिए चात्रक रहे परन्तु हम प्रभु-सन्तान तो उसके पुनीत प्यार का निशि-दिन रसास्वादन करते हैं। इतना ही नहीं, हमने उसे अपने बच्चों को गले से लगाकर पुचकारते भी देखा और पल भर में रूहों के दर्द हरते भी देखा।

भगवान को गीता-ज्ञान देते देखा—

जो कान युगों से प्रभु की सुखदायिनी, मन भावनी आवाज़, क्षण भर को सुनने के लिए प्यासे थे, उन्हीं कानों से हमने, मन को रस देने वाली, प्रभु के मुख से निकली वाणी घण्टों तक सुनी। भक्त जब सुनते हैं कि भगवान ने स्वयं गीता ज्ञान दिया था तो वे सोचते हैं कि काश! वे भी प्रभु से गीता-ज्ञान सुन पाते। परन्तु वह कल्पना अब साकार है। ब्रह्मा-वत्स रोज़ उन्हें गीता-ज्ञान सुनाते

हुए देखते हैं। इन आँखों द्वारा हमने ज्ञान-सागर को ज्ञान के सम्पूर्ण रहस्य खोलते देखा। रचयिता व रचना के गुह्य राज़ स्पष्ट करते हुए देखा। अपने वत्सों के समक्ष तीनों लोकों व तीनों कालों के गूढ़ रहस्य समझाते देखा। जबकि एक काठ की वीणा भी मनुष्य के मन को मुग्ध कर देती है, तो भगवान की ज्ञान-वीणा मनुष्यों के मन को कितना मुग्ध करती होगी। लोग कहते हैं कि उसने प्रेरणा से ज्ञान दिया परन्तु हमने तो उसको सम्मुख ज्ञान देते हुए देखा। हमने उसे मुक्ति व जीवन्मुक्ति का सत्य पथ दर्शाते भी देखा तो पुरातन मान्यताओं को निराधार बताते भी देखा।

प्रभु को नव-युग रचते देखा—

सृष्टि-रचना के बारे में प्रचलित अनेक दर्शनों को असत्य सिद्ध करते हुए हमने इन आँखों से देखा कि भगवान नवयुग का निर्माण कैसे कर रहे हैं। लोग कहते हैं कि उसने सूर्य, चाँद, तारे, ग्रह, पृथ्वी व फिर मनुष्य बनाये, परन्तु हमने देखा कि उसने मनुष्य को देवता कैसे बनाया। कैसे उसने कीट-सम मानव को पारस तुल्य बनाया। कैसे उसने मनुष्यों के मन के काँटों को चुन-चुन कर उन्हें दिव्यता प्रदान की। हम अब भी साक्षात् देख रहे हैं कि वे परम प्रभु कैसे नवयुग का निर्माण कर रहे हैं।

भगवान को शक्ति-सेना तैयार करते देखा—

रावण को पराजित करने के लिए, माया के साम्राज्य का सफाया करने के लिए उस सर्व शक्तिवान ने कैसे अपनी सेना तैयार की, यह इन नयनों से प्रत्यक्ष देखा। कमज़ोर नर-नारियों में ज्ञान-योग के बाण भरते हुए, उनकी कमज़ोरियों को बार-बार नष्ट करते हुए, उन्हें विजय का तिलक लगा कर युद्ध-क्षेत्र में भेजते हुए हमने उस महान सत्ता को देखा। हमने देखा कि भगवान ने किस तरह अपनी शक्ति सेना को सुसज्जित किया। उनमें आत्म-विश्वास जागृत किया। हम शक्ति सेना व रावण की सेना का युद्ध भी देख रहे हैं और यह भी देख रहे हैं कि रावण सेना पराजित होकर पीछे हट रही है और शिवशक्ति सेना विजय का नगारा बजाते हुए तीव्र गति से आगे बढ़ रही है। हम प्रतिदिन उस परम सत्ता को अपनी सेना की मार्ग प्रदर्शना करते हुए देखते हैं।

भगवान को रूहों को धीरज देते देखा—

हमने देखा कि भगवान अपने प्रिय बच्चों के प्यार में सारी-सारी रातें बैठकर बच्चों की करुण कहानियाँ कैसे सुनते हैं। और उन्हें गले से लगाकर धीरज कैसे देते हैं। अनेक रूहों के दुख की गाथाएँ सुनकर उनके दुख निवारण करते देखा! हमने देखा कि वे प्यार के सागर बिगड़ी को बनाने वाले, आत्माओं की जन्म-जन्म की प्यास बुझाने के लिए किस प्रकार उनके भारी दिल को हल्का करते हैं। उनकी हर बात सुनकर समा लेते हैं। उस क्षमा के सागर को रूहों के पाप क्षमा करते हुए भी देखा और दया-निधान का दयालु स्वरूप भी देखा।

भाग्य विधाता को भाग्य बाँटते हुए देखा—

हमने देखा कि वह अढवर दानी भोलानाथ सर्व खज़ाने बाँटने धरती पर आते हैं। और रूहों के समक्ष सब कुछ लुटा देते हैं। परन्तु कोई कुछ लेता है और कोई कुछ! सुना था कि कभी भगवान ने भाग्य बाँटा था। परन्तु कैसे बाँटा, वो अब हमने देखा। और हमें भी उसने मास्टर भाग्य विधाता बनाकर सर्व खजानों से भरपूर कर दिया। वह अब भाग्य बाँट रहे हैं, जो चाहो ले लो।

उस बागवान को चेतन पुष्पों में सुगन्ध भरते देखा—

हम आत्माएँ उस परम बागवान के चेतन बगीचे के चेतन पुष्प हैं। हम पुष्पों से पँखड़िया सूख-सूखकर गिर रही थीं, कोई भी हमें पानी देने वाला नहीं था। सुगन्ध, दुर्गन्ध में परिणित हो चुकी थी। ऐसे में वह बागवान पुनः आया और हमने देखा कैसे वह एक-एक पुष्प में दिव्य सुगन्धी भरता जा रहा है। तथा स्वयं भी एक-एक पुष्प की सुगन्धी ले रहा है। अब शीघ्र ही इन चेतन पुष्पों की अलौकिक सुगन्ध से समस्त विश्व महक उठेगा और विकारों की दुर्गन्ध सदा के लिए समाप्त हो जायेगी।

भगवान को माँ के रूप में देखा—

प्रभु को माता बनकर, बच्चों को अपनी गोद में छुपाकर, माया शत्रु से सुरक्षित करते देखा। ज्ञान की मीठी-मीठी लोरी देकर, उनका सबकुछ

दिल में समाकर अपने आँचल में छुपाते देखा। इन आँखों ने उसे माँ रूप में भी निहारा और मित्र रूप में भी। उनका पित स्वरूप भी देखा और पूर्ण सहयोगी सखा स्वरूप भी। मनुष्य रूप में विचरण करते हुए इस धरती पर, हमने उस परम विभूति को देखा।

गोपी वल्लभ व गोप गोपियों का मिलन भी देखा व बिछड़न भी···

भागवत् में गोप-गोपियों के प्रभु के साथ चरित्र सुनकर मन कहता था कि काश ! मैं भी एक गोप या गोपी होता। और अब ऐसा ही हुआ। भगवान के अनेक दिव्य चरित्र, उनका खेलना और खिलाना, बहलना और बहलाना इन आँखों से देखा। मिलन के मन मोहक दृश्य भी देखे और बिछुड़न के अनोखे दृश्य भी। और इस बिछुड़न में दोनों के ही नयनों को गीले होते हुए देखा।

दिव्य-दृष्टि दाता को दिव्य-दृष्टि देते हुए देखा—

भक्त तो क्षणिक दर्शन को तरसते हैं परन्तु हमने देखा कि वो दिव्य दृष्टि का विधाता अनेक आत्माओं को दिव्य दष्टि का वरदान देकर सम्पूर्ण अलौकिक साक्षात्कार करा रहे हैं। जो अब तक रहस्य थे, वे सब साक्षात् हो गये। कितनी महान हैं वे आत्माएँ जो यहीं पर बैठे स्वर्ग के व तीनों लोकों के दृश्य देख सकती हैं। जो अप्रत्यक्ष था, वो सब प्रत्यक्ष देखा।

इन नयनों ने अनेक रूहों को भगवान के नयनों का नूर बनते भी देखा और अनेकों को प्रभु से दिव्य प्रकाश प्राप्त करके समस्त विश्व को प्रकाशित करते भी देखा। इन नयनों ने ज्ञान सागर से ज्ञान गंगाओं को जल भरते भी देखा और ज्ञान-सरिताओं को सागर से मिलने के लिए प्रवाहित होते भी देखा। धन्य हैं वे आत्माएँ जो भगवान के बच्चे बने और जिन्होंने भगवान को अपना बना लिया, जो उसके प्यार के व पावन दृष्टि के अधिकारी बन गये और जिन्हें भगवान ने स्वयं कहा कि "तुम मेरे हो"।

हमने अनेक रूहों को प्रभु की असीम छत्र छाया में परम आनन्द व अतीन्द्रिय सुख पाते भी देखा। और प्रभु मिलन का परम आनन्द पाकर ईश्वरीय प्रेम में जगत से विरक्त होते भी देखा।

हम अब भी देख रहे हैं कि अनेक आत्माएँ जो कि बहुत काल से अपने प्यारे परम पिता से बिछुड़ गई थीं, दौड़ी-दौड़ी आकर मिलन मना रही हैं। और अनेक आत्माएँ पुनः अपना श्रेष्ठ भाग्य निर्माण कर रही हैं। प्रभु अखुट खज़ाने बाँट रहे हैं, कोई अपनी झोलियाँ भर रहे हैं और कोई अभी भी सोये हुए हैं।

□□

आप कहाँ चल रहे हैं ? (पृष्ठ ८ का शेष)

मैंने कहा—"इसका अर्थ तो यह हुआ कि सिर भले ही चला जाय पर संस्कार नहीं जायेगा। स्वयं भले ही मर जायें परन्तु जीते-जी पुराने संस्कारों से नहीं मरेंगे। क्या आप ने यही सोच रक्खा है ? क्या जीवन को ऐसे ही चलाते रहना है जैसे चलाते आये हो ? क्या इसी जीवन से सन्तुष्ट हो ? आप दुनिया को देखते ही क्यों हो, अपने लक्ष्य को क्यों नहीं देखते ? जो दुनिया मरी ही पड़ी है, विकराल काल के मुँह का ग्रास बनी ही पड़ी है, उसके तुम अनुयायी बनते ही क्यों हो, क्या ज्ञान का नेत्र अभी नहीं खुला ? क्या कृष्ण की अपेक्षा काल अधिक प्रिय है ? क्या असुर अच्छे लगते हैं, ईश्वर अच्छा नहीं लगता ? क्या काम प्रिय है, राम प्रिय नहीं है ? क्या आप को विकार चाहिए, प्रभु का वरदान नहीं चाहिए ? क्या इन विषय-भोगों से कभी कोई तृप्त हुआ है जो आप होना चाहते हो ? अब इनको छोड़ोगे तो मुक्ति होगी, नहीं तो मौत तो होती ही आई है और महाविनाश अब आने ही वाला है ! बोलो, आपको जाना किधर है ?

जिज्ञासु बोला—"जाना तो ईश्वर ही की ओर है। बहन जी, आप ठीक कहती हैं मैं कृष्णपुरी में अथवा बैकुण्ठ जाना चाहता हूँ, काल के मुँह में कुचला नहीं जाना चाहता। अब मैं विष नहीं अमृत पीऊँगा। अब में संस्कारों को बदलूँगा। अब मेरा ज्ञान-चक्षु खुल गया है, मैं लक्ष्य को सामने रखकर मुक्ति और जीवन्मुक्ति ही के लिए पुरुषार्थ करूँगा।

आप कहां चल रहे हैं ?

ब० कु० राज, अमृतसर

एक जिज्ञासु तीन-चार दिन यहाँ सेवा-केन्द्र पर ईश्वरीय ज्ञान सुनने के लिए आया। पाँचवें दिन जब वह आकर बैठा तो मैंने ज्ञान सुनाने से पहिले पूछ लिया—'भाई जी कैसे हो ?' मेरे पूछने का भाव यह था कि ईश्वरीय ज्ञान के श्रवण से उसे कुछ शान्ति मिली, ईश्वर की ओर उसकी कुछ लग्न लगी और मुख्य बात यह कि उसके जीवन में कुछ परिवर्तन भी आया या नहीं।

जिज्ञासु ने उत्तर दिया—'बहन जी, चल रहा हूँ ?'

मैंने कहा—चल तो रहे हो परन्तु मेरे पूछने का भाव तो यह था कि ज्ञान-मार्ग पर चल रहे हो, इस सृष्टि रूपी नाटक में साक्षी होकर चल रहे हो, इसकी भावी को ढाल बना कर चल रहे हो, क्या नियमों में ठीक रीति से चल रहे हो और ईश्वरीय मत पर भी चल रहे हो या जिधर दुनिया चल रही है, उधर ही चल रहे हो ?'

जिज्ञासु बोला—'बहन जी, कभी-कभी मन में द्वन्द्व चल पड़ता है।'

मैंने पूछा—'तो गोया आप नहीं चल रहे हो, आपके मन में द्वन्द्व चल रहा है।

जिज्ञासु ने कहा—'जी नहीं, मैं भी चल रहा हूँ। परन्तु बात यह है कि कई बार दुनिया की चाल को देखकर मैं भी यह सोचकर उधर ही चल पड़ता हूँ कि हम भी दुनिया के साथ हैं जो हाल सारी दुनिया का होगा वही हमारा भी होगा—सो देखा जायगा।'

मैंने पूछा—'परन्तु जानते हो दुनिया किधर चल रही है ? यह भी कभी सोचा है कि इस चाल से दुनिया की हालत क्या हुई है ?

जिज्ञासु—बहन जी, दुनिया तो विषय-विकारों और भोगों की तरफ़ चल रही है, वह तो मान-शान की और बनाव-श्रृंगार की तरफ़ जा रही है।

मैंने कहा—'विकारों की ओर तो दुनिया द्वापर युग से चलती आ रही है, तभी तो उसकी ऐसी हालत हुई है परन्तु अब तो दुनिया महाकाल की ओर जा रही है। जब-कभी आप के मन में यह विचार आता है कि जिधर दुनिया जा रही है, मैं भी उधर जाऊँ, तब यही सोचा करो कि दुनिया तो **महाकाल** की ओर जा रही है परन्तु मुझे तो **जीवन्मुक्ति** की ओर जाना है। जीवन के लक्ष्य को सामने न रखने से आप की चाल कुमार्ग की ओर हो जाती है।'

जिज्ञासु बोला—"बहन जी, दुनिया महाकाल की ओर कैसे जा रही है ? 'महाकाल' का क्या अर्थ है ?"

मैंने कहा—"काल अथवा मृत्यु के वशीभूत तो मनुष्य इन दो युगों में कई बार होता ही आया है परन्तु अब तो वह महाकाल की ओर बढ़ रहा है। मनुष्यों के पापों का घड़ा, अब भरने वाला है। अब संसार में पापाचार इतना बढ़ गया है कि अब निकट भविष्य में महामृत्यु आने वाली है जो बहुत ही पीड़ाजनक होगी। यहाँ बहुत ही भयंकर प्राकृतिक प्रकोप होंगे और लोग क्रोध, द्वेष, हिंसा के वशीभूत होकर खून की नदियाँ बहायेंगे। अन्न की कमी के कारण लोग बहुत पीड़ित होंगे और एक-दूसरे पर भी झपटेंगे। मनुष्य परमात्मा से विपरीत-बुद्धि होने के कारण अब विनाश काल की दहलीज़ पर पहुँचने ही वाला है। सभी विकारों और विपरीत बुद्धि मनुष्य उस महाकाल ही के मुख में जा रहे हैं। परन्तु आपको तो जीवन्मुक्ति अथवा सुखधाम में जाना है ना ?"

जिज्ञासु बोला—"जी, बहन जी, सुख ही तो हर एक मनुष्य चाहता है। परन्तु पुरानी आदतें जो पड़ी हुई हैं और संस्कार जो बने हुए हैं, वे मनुष्य को फिर उसी मार्ग पर खींच कर ले जाते हैं।"

(शेष पृष्ठ ७ पर)

महबूब नगर में ब्र० कु० प्रेम शिवरात्री पर्व का रहस्योद्-घाटन करते हुए।

पंढरपुर में शिव जयन्ती महोत्सव के अवसर पर मंच पर उपस्थित हैं न्यायाधीश भ्राता विजयसिंह दि० देशमुख, प्राचार्य एस० एन० यादव जी, ब्र० कु० सोमप्रभा तथा अन्य ब्र० कु० बहनें।

हडपसर गांव (पूना) में शिव मन्दिर में हुए आध्यात्मिक कार्यक्रम में ब्र० कु० ब्रिजशान्ता जी शिव परमात्मा का परिचय देते हुए।

कृष्णानगर (दिल्ली) में आयोजित ४८वीं त्रिमूर्ति शिव जयन्ती का उद्घाटन करते हुए पार्षद भ्राता सुखनलाल सूद जी।

कलकत्ता में हुए शिवरात्री महोत्सव पर मुख्य अतिथि भ्राता श्याम सुन्दर गुप्ता अपने विचार प्रकट करते हुए। मंच पर दादी निर्मल शान्ता जी, कानन बहिन तथा बिन्दु बहन विराजमान है।

होसपेट में शिव जयन्ती महोत्सव पर ब्र० कु० शारदा शिव रात्री का महत्व सुनाते हुए।

कटक में ४८वीं त्रिमूर्ति शिव जयन्ती के अवसर पर कार्य-क्रम में प्रवचन करते हुए मुख्य अतिथि भ्राता हरिहर महा-पात्र जी जस्टिस उड़ीसा हाईकोर्ट, उनके बांयी ओर बैठे हैं भ्राता एम० के० रावत जी, भ्राता सुब्रह्मण्यम जी, तथा दांयी ओर ब्र० कु० कुलदीप तथा ब्र० कु० अंर्तयामी जी।

मेरठ में शिव जयन्ती के अवसर पर → शिवध्वजारोहण करती हुई ब्र० कु० कमल सुन्दरी जी।

← राजगढ़ में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्-घाटन करते हुए भ्राता के० के० शर्मा एस० डी० ओ०, जी।

गोहाटी में शिवध्वजारोहण के पश्चात → ब्र० कु० शीला बहन जी, असम राज्य के साहित्यकार भ्राता जुगलदास जी व अन्य बहन भाई खड़े हैं।

← बैरागढ़ (भोपाल) में शिवरात्री महोत्सव के अवसर पर ब्र० कु० शैलम दैनिक भास्कर के मालिक भ्राता बी० डी० अग्रवाल को 'सर्व आत्माओं का पिता शिव' का चित्र भेंट करती हुई।

झज्जर में शिव जयन्ती समारोह का → उद्घाटन भ्राता सिंघाणी जी तथा ब्र० कु० लता जी दीप प्रज्जवलित करके कर रहे हैं।

← उत्तम नगर (दिल्ली) में ४८ वीं त्रिमूर्ति शिव जयन्ती समारोह में महानगर पार्षद भ्राता भौरीलाल शास्त्री प्रवचन करते हुए। साथ में ब्र० कु० पुष्पा बैठी हैं।

देगलूर में ४८ वीं शिव जयन्ती के कार्य-→ क्रम पर प्राचार्य भ्राता शेट्टे जी प्रवचन कर रहे हैं।

← शिवसागर में आध्यात्मिक प्रदर्शनी के उद्घाटन पश्चात् वहां के डिप्टी कमिश्नर भ्राता शरद गुप्ता चित्रों पर समझते हुए।

जजपुर (कटक) में शिव जयन्ती के → अवसर पर शिवध्वजारोहण पश्चात् सर्व ब्र० कु० भाई बहन शिव बाबा की याद में खड़े हैं।

← बरनाला में शिव दर्शन प्रदर्शनी का उद्-घाटन नगर पालिका के प्रधान अमरजीत सिंह सिद्धू कर रहे हैं।

जबलपुर सेवा केन्द्र पर राजयोग शिविर का उद्घाटन करते हुए स्वामी सत्यमित्रानन्द गिरि जी।

लखनऊ पेपर मिल कालोनी सेवा केन्द्र की ओर से ईश्वरीय सेवा का कार्यक्रम रखा गया। ब्र० कु० सुमित्रा जी प्रवचन करते हुए दिखाई दे रही हैं।

बिरसिंहपुर (म० प्र०) में राजयोग शिविर का उद्घाटन करते हुए विकास खंड अधिकारी भ्राता द्विवेदी जी तथा लालरी प्रबन्धक एन० एस० सिलेदार जी।

भावनगर में हुए 'परमात्म परिचय सम्मेलन' को सम्बोधित करते हुए वहां के सी० एम० ओ०। मंच पर (बाएं से) ब्र० कु० कान्ति भाई, ब्र० कु० गीता, भगिनी हितेषी बहन तथा जिला सैशन जज भ्राता भट्ट जी बैठे हैं।

भिलाई में शिवरात्री के उपलक्ष्य में आयोजित "मानव जागृति आध्यात्मिक सम्मेलन" का उद्घाटन करते हुए भिलाई स्टील प्लाट के जनरल मैनेजर (वर्कस) भ्रात रामाकृष्णा जी।

चन्द्रपुर सेवाकेन्द्र द्वारा शिव जयन्ती पर स्लाईड दिखाई गयी। स्टेज पर जिला के पुलिस अधिकारी भाई पंकज गुप्ता व अन्य भाई-बहन बैठे हैं।

ओद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान चन्द्रपुर में ब्र०कु० पटले भाई प्रवचन करते हुए, साथ में ब्र० कु० दीपक भाई, शंकर भाई तथा वहां के प्रधानाचार्य भी मंच पर उपस्थित हैं।

बोकारों में आयोजित 'शिव दर्शन प्रदर्शनी' के उद्घाटन पश्चात् कार्यक्रम में मंच पर ब्र० कु० कुसम तथा उनके बाएं महिला समाज की अध्यक्षा बहन रानी आहूजा तथा अन्य विराजमान हैं।

अलवर—सर्व धर्म सम्मेलन के अवसर पर भाषण करती हुई ब्र० कु० पूनम व मंच पर अनेक प्रतिष्ठित वक्तागण दिखाई दे रहे हैं।

भुवनेश्वर में ४८ वीं त्रिमूर्ति शिवजयन्ती पर शिवध्वजा-रोहण करती हुई ब्र० कु० सन्देशी जी।

मुरादाबाद—शिव जयन्ती के अवसर पर एक विशेष प्रोगाम में ब्र० कु० गंगा बहन हाफिज मोहमद सद्दीकी राज्य-मंत्री-राजस्व एवं अभाग सहायता को ईश्वरीय सौगात भेंट कर रही हैं।

होशियारपुर में शिवरात्रि पर ब्र० कु० राज शिव ध्वजा-रोहण करतीं हुईं। साथ में नगर के प्रमुख व्यक्ति खड़े हैं।

बसवन बागेवाडि में ४८ वीं शिव जयन्ती पर बहन कमला चेव्हाण जी सम्बोधित करते हुए।

बरीपदा में शिवरात्रि महोत्सव के अवसर पर शिवध्वजा-रोहण पश्चात् सर्व शिव बाबा की याद में खड़े हैं।

बिदर में शिवरात्री के महोत्सव के उपलक्ष्य में जायन्ट डायरैक्टर इन्डस्ट्रीज तथा कामर्स ध्वजारोहण पश्चात् दीपक प्रज्ज्वलित करते हुए।

चिक्काबल्लापुर में आध्यात्मिक प्रदर्शनी के उद्घाटन के अवसर पर वी० पी० बहीगर(असिस्टेन्ट कमिश्नर चिक्का बल्लापुर भाषण करते हुए।

डालटेन गंज (रांची) में आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी के उद्घाटन अवसर पर ब्र० कु० निर्मला जी प्राचार्य भ्राता सूर्यदेव नारायण सिंह जी को श्रीलक्ष्मी नारायण का चित्र भेंट करते हुए।

टक्सालो मूल्य और भावना का मूल्य

ब्र० कु० चक्रधारी, शक्ति नगर, देहली

संसार और व्यवहार में नोट पर जो मूल्य छपा होता है, वही उसका तत्कालीन मूल्य माना जाता है। बाज़ार में दस रुपये के नोट को लोग १० रुपये और सौ रुपये के नोट को १०० रुपये के मूल्य का मान कर चलते हैं परन्तु नोट का मूल्य भी किन्हीं परिस्थितियों में बदल जाता है। उसके विषय में हम पहले नीचे कुछ उदाहरण और बाद में एक छोटी-सी कहानी प्रस्तुत कर रहे हैं।

मूल्य में तबदीली

एक व्यक्ति के घर में उसके सामने ही उसका एक छोटा-सा बच्चा बहुत सख्त बीमार है लेकिन उसके पास इतने पैसे नहीं हैं कि वह डाक्टर को फीस दे सके या बाज़ार से दवाई खरीद सके या बच्चे को दूध पिला सके। ऐसे समय पर यदि उसको कोई १० रुपये का नोट भी देता है तो वह व्यक्ति कहता है—"बाबूजी, मैं इसका मूल्य उम्र भर नहीं चुका सकता। ये १० रुपये नहीं हैं, मेरे लिए ये एक लाख रुपये से भी अधिक हैं क्योंकि इसने मेरे बच्चे के जीवन को बचा दिया और जीवन का मूल्य कोई नहीं चुका सकता।"

दूसरा उदाहरण

एक व्यक्ति किसी दूसरे को ५००० रुपये की सहायता के लिए आवेदन करता है। वह व्यक्ति पहले तो मदद देने से इन्कार करता है और फिर जब देखता है कि आवेदन करने वाला व्यक्ति रुष्ट हो रहा है और दूसरों को भी भड़का रहा है, तब अपमानजनक तरीके से उसे कहता है—"अच्छा भाई, ले जाओ। तुमने तो परेशान कर दिया है। मेरा खून चूस लिया है, खून! तुम्हारे जैसे ढीठ और तंग करने वाले आदमी को एक पैसा भी देने का मन नहीं करता। मैं आज तुम्हें पैसा दे रहा हूँ, इसके बाद मैं तुम्हारा मुँह नहीं देखना चाहता।" इस पर वह आवेदन करने वाला कहता है—ये पैसे अपने पास रखो, तुम्हारा एक धेला भी मुझे नहीं चाहिए। बाबूजी, इज़्ज़त पैसे से बड़ी चीज़ होती है। आप मुझे पैसा न दें, यह आपकी मर्ज़ी है लेकिन आप मेरी इज़्ज़त पर हाथ नहीं डाल सकते। यह कहकर वह आदमी पैसे लेने से इन्कार कर देता है। गोया उसके लिए वे ५००० रुपये कोई काम के नहीं रहे बल्कि वे पैसे उसे पिंच (Pinch) करते हैं।

तीसरा उदाहरण

एक स्कूटर चलाने वाला ड्राईवर पीछे मुड़कर देखता है कि एक सवारी जिसे वह छोड़ आया है, उसके स्कूटर में एक मनी पर्स (Money Purse) भूल गई है जिसमें २५,००० रुपये हैं। वह ग़रीब आदमी है और २५००० रुपये उसके लिए काफ़ी बड़ी रकम है। इस रकम से वह एक नया स्कूटर खरीद कर स्कूटर का मालिक बन सकता है जबकि अभी वह किराये पर लिए स्कूटर को चलाता है। परन्तु यह सब परिस्थिति सामने होने पर भी वह २५,००० रुपये को अपने लिए मिट्टी के बराबर समझता है। उन्हें रखने की चेष्टा को वह अनाधिकार चेष्टा मानता है, नहीं, नहीं पाप समझता है। अतः वह पुलिस स्टेशन पर जाकर पैसे जमा करा देता है।

उपरोक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि नोट पर मूल्य छपा होने के बावजूद भी विभिन्न प्रकार की परिस्थितियों में व विभिन्न दृष्टिकोण से नोट का मूल्य घटता बढ़ता रहता है। इस विषय में और भी कई उदाहरण दिये जा सकते हैं परन्तु प्रसंग अनुसार हम यह बताना चाहते हैं कि जो व्यक्ति किसी अच्छे कार्य के लिए कुछ पैसा-पूंजी समर्पित करते हैं उसका मूल्य भी नोट पर छपे मूल्य से कुछ

भिन्न होता है। प्रभु के पास उस व्यक्ति की भावना व श्रद्धा, उसका स्नेह और सौहार्द्र तथा उसकी आर्थिक स्थिति तथा जिस समय पर उसने दिया, उस समय की परिस्थिति आदि बातों का भी अपना-अपना मूल्य है। इसी प्रसंग में हमें एक कहानी याद हो आती है।

कहानी

एक गाँव में एक पंचायतघर बनाने की आवश्यकता हुई। गाँव के कुछ मुख्य लोगों ने सोचा कि यह पंचायतघर गाँव के सभी लोगों के लिए लाभदायक सिद्ध होगा तो इसके लिए सभी गाँववासियों को इसमें अपना योगदान देना चाहिए। इस प्रकार यह सोचकर एक दिन कुछ लोग इकट्ठे होकर पूरे गाँव का चक्र लगाने निकले। वे हर घर में जाते, उन्हें पंचायतघर बनाने की योजना सुनाते और उनसे कुछ सहयोग देने के लिए निवेदन करते। सभी बहुत खुशी से कुछ-न-कुछ उस दान-पात्र में डाल देते। जब वे गाँव के मुखिया के घर पहुँचे, उसने १००० रुपये चन्दे के रूप में दे दिये। एक दूसरे व्यक्ति ने, जो एक अच्छा ही साहूकार व्यक्ति था, ५०० रुपये दिये। इस प्रकार सायंकाल तक उनके पास काफ़ी धन-राशि एकत्रित हो गई। सायंकाल वह एक झोंपड़ी में पहुँचे जहाँ एक गरीब विधवा माता अपने दो बच्चों के साथ रहा करती थी। जब उन लोगों ने उसे भी पंचायतघर बनाए जाने की योजना सुनाई तो वह कहने लगी—"मैं एक अत्यन्त साधारण, ग़रीब औरत हूँ। मैं इसमें क्या मदद कर सकूँगी! मेरे पास ये आठ आने (५० पैसे) हैं जो मैंने आज मज़दूरी कर कमाए हैं, आप ये ही ले लीजिए।" और यह कहकर उसने अपनी फटी-पुरानी धोती के पल्लू में बंधे ५० पैसे निकाल उनके दान-पात्र में डाल दिये।

शाम को सब गाँव वाले एक ऊँचे से चबूतरे पर एकत्रित हुए। वे यह जानने के लिए बहुत उत्सुक थे कि कितनी धन-राशि एकत्रित हुई। चन्दा इकट्ठा करने के लिए जो व्यक्ति निमित्त थे उनमें से एक व्यक्ति मंच पर खड़ा हुआ। उसने यह बताते हुए कि कितनी धन-राशि एकत्रित हुई, पूछा, क्या आप जानते हैं कि सबसे अधिक किसने दिया?" सभी एक आवाज़ में बोल उठे कि गाँव के मुखिया ने ही दिये होंगे। उसने कहा—नहीं। सभा के बीच में खुसर-पुसर होने लगी कि आखिर फिर किसने दिये होंगे। सभा में से एक व्यक्ति खड़ा हुआ और कहने लगा—धनीराम जमींदार ने दिये होंगे। मंच पर खड़े व्यक्ति ने कहा—नहीं, उसने भी नहीं। सभा में एक चुप्पी-सी छा गई। तब उस व्यक्ति ने बताया कि सबसे अधिक धन-राशि उस ग़रीब चमेली माता ने दी जो केवल दिन-भर में ५० पैसे ही कमाती है और उसने अपने दिन-भर की सारी कमाई इसके लिए समर्पित कर दी। उसने कहा कि गाँव के मुखिया और धनीराम जमींदार ने बेशक सबकी तुलना में अधिक चन्दा दिया, परन्तु उनके पास तो उससे कई गुणा धन तिजोरियों में बन्द है। उन्होंने तो उसका एक अंश ही दिया परन्तु उस माता ने भूखा रहकर, अपने बच्चों को भूखा रखकर भी अपने दिन-भर की कमाई दे दी। अब आप ही बताइये कि किसने सबसे अधिक सहयोग दिया? सभी उस माता को धन्य हो, धन्य हो कहने लगे।

इस प्रकार परमात्मा के कार्य में जो लोग आर्थिक योगदान देते हैं, उसका मूल्य न केवल टक्साली कीमत (Mint value) के अनुसार होता है बल्कि उसमें उस व्यक्ति की भावना, उसका ईश्वरीय स्नेह और उसकी अपनी आर्थिक स्थिति इत्यादि बातों पर भी निर्भर करता है। उस अनुपात से एक अति निर्धन व्यक्ति के आठ आने (अर्थात ५० पैसे) एक धनवान व्यक्ति के ८०० रुपये के बराबर भी हो सकते हैं।

एकांकी

खुशी का रहस्य

ब्र० कु० आत्म प्रकाश, आबू

निर्मल का कक्ष···चारों ओर अशान्ति के बादल मंडरा रहे हैं। निर्मल के चेहरे पर बेचैनी दिखाई दे रही है।

निर्मल (स्वगत)—हे प्रभु···अब मैं कहां जाऊं··· मेरा कौन है इस दुनिया में···हाय, मेरा जीवन अशान्त हो गया···मैं आई थी किस लिए और मैं क्या कर बैठी ! मैंने अपने जीवन को क्यों अग्नि में डाल दिया···हाय मेरा भाग्य, अब मैं किसे कहूं···कौन है मेरा···

जिस संसार को मैंने अपना समझा था, वो ही बेगाना हो गया···जिनसे मैंने प्रीत की थी, वे भी मेरा साथ छोड़ गये···हे भगवान, तुम ही बताओ, मैं अब किससे अपने मन की बात कहूं···अब तो तुम ही मुझे नज़र आते हो। मैं कहां जाऊं···हाय ···मैं क्या करूं···**उठकर घूमती है** (बेचैन मन से)—हाय, असहनीय पीड़ा···हे प्रभु, अब मैं जीने लायक नहीं रही···मैं कैसे मुंह दिखाऊं···धिक्कार है मेरा जीवन, धिक्कार है मेरी बुद्धि मैंने अपने को बुद्धिमान समझा और निकली मूर्ख···

(अहसास से)—ओह, मैंने अनजाने में ही भूल कर दी···मुझे क्या पता था कि इसका परिणाम इतना असह्य होगा। मेरे जीवन की सभी आशाएँ धूमिल हो गईं। सोचा क्या था और हो क्या गया···हे प्रभु अब मैं जी नहीं सकूंगी···तुम ही मुझे क्षमा कर दो···प्रभु क्या तुम मुझे क्षमा नहीं करोगे··· प्रभु मुझे फिर से स्वीकार कर लो। मैं महापापिन हूं, मैंने तुमसे धोखा किया, हे प्रभु मुझे माफ़ कर दो···

(अधिक अशान्त होकर)—

मैं मर जाऊं···हे धरती तू ही मुझे रास्ता दे··· मैं सदा के लिए सबकी नज़रों से दूर हो जाऊं··· मैं अब जी कर क्या करूंगी···

(पुनर्जागृति में)

परन्तु मरकर भी क्या होगा···मैं कुछ भी नहीं कर सकूंगी···मेरी अशान्ति मुझे कहां ले जाएगी। मेरे भविष्य का क्या होगा। मुझे चारों ओर अन्धकार ही अन्धकार नज़र आता है···हाय मेरी तकदीर, तूने भी मुझे सावधान न किया।

तब ही उसके मन में एक प्रेरणा जागी—

तुम अपनी भूल सच-सच कह दो तो तुम्हारा मन हल्का हो जायेगा और पुनः खुशी को प्राप्त कर सकोगी।

निर्बल हूं कहा जाऊं मैं
ये दिल किसे दिखालाऊं मैं
मेरी खुशियों में बादल छाये
तन मन को निश दिन जलाये
निर्बल हूं···
मैंने खुद ही ये कांटे लगाये
इस जीवन के पथ उलझाये
मेरी खोटी थी किस्मत ये काली
अब कैसे करूं मैं उजियाली
निर्बल हूं···
हे भगवान मुझे तुम बचाओ
इस जीवन की अग्नि को बुझाओ
मेरे मन की कालिमा धोकर
मेरे जीवन को रोशन कराओ
निर्बल हूं···

अब उसको चेतना जागी

ओह, मैंने तो भगवान से वायदा किया था··· कि मैं तुमसे सच्ची रहूंगी···तुम्हीं मेरे सच्चे प्रियतम हो···मैं तुम्हारी हूं। ओह, मैंने प्रभु से किया

वायदा तोड़ दिया खुद ही अपने शान्त प्रिय जीवन को चिन्ताओं की अग्नि में डाल दिया।

(उसका मन मुस्कराया)···

तो मैं सब कुछ बता दूंगी···जो भी होगा देखा जाएगा···या मौत या विजय। मैं प्रभु से किया वायदा अवश्य निभाऊंगी···फिर मन पर छाये अन्धकार ने वार किया···

मैं बताऊं···आह, मैं सारा भेद खोल दूं।··· नहीं, नहीं···यह मुझसे नहीं होगा···यह मेरी सामर्थ्य से बाहर है। कहीं ऐसा न हो कि सच बताने से और ही मेरी दुर्दशा हो जाए और मैं कहीं की भी न रहूं···नहीं, नहीं मैं यह नहीं करूंगी···

ओह, मेरी दुविधा···कैसे सुलझाऊं इस दुविधा को···हे प्रभु मुझे बल दो···मुझे सद्बुद्धि दो···अब मैं असहाय हूं···निर्बल हूं···हे प्रभु···मेरी रक्षा करो।

उसकी चेतना पुनः जागी

ओह···जान गई···जान गई···मुझे दिल का बोझ प्रभु को अर्पण कराना ही होगा···मैं अब और अधिक इस बोझ को नहीं ढोऊंगी। मैं आज ही अपनी सारी भूलें बता दूंगी। भले ही मेरी बदनामी हो···चाहे कुछ भी हो, चाहे मुझे मरना पड़े, मुझे मौत स्वीकार है, परन्तु अब मैं···कुछ छिपाऊंगी नहीं···

(और उसका मन खिल उठा···)

दूसरा दृश्य

वही कक्ष···अकेली निर्मल···हर्षित चेहरा···

मन में नये विचार उसे प्रफुल्लित कर रहे हैं···

आज मेरे जीवन का प्रथम दिन है···आह, कहां गया मेरा बोझ जो मेरे लिए पहाड़ था, वह रुई की तरह कहां उड़ गया···मैं स्वप्न तो नहीं देख रही हूं···

मैंने अपनी मन की गुत्थियों को खोल दिया··· आह, भगवान के समक्ष खोल दिया···आज सबेरे मुझे जीवन की सच्ची खुशी का एहसास हुआ। आज ही मैंने सुखद क्षण देखे···

आह, मैंने पहले ही यह शुभ काम क्यों नहीं कर दिया···कैसे मेरे ऊपर ये माया का पर्दा आ गया था···आह, मेरा इतना लम्बा समय योंही माया के थपेड़ों में व्यतीत हुआ···मेरा दुर्भाग्य··· मेरा प्रभु मिलन का ये काल दैहिक आकर्षणों में बीत गया···मेरी रोशनी लुप्त हो गई थी। हे प्रभु, अब तुम ही बताओ मैं इस क्षति को कैसे पूर्ण करूं···

आज शान्ति मेरे मन को बार-बार खींच रही है। मन पूर्णतया शान्त है। उसने सब कुछ खो दिया या सब कुछ पा लिया। नहीं-नहीं खोया नहीं, पाया है, पाया है···

तभी ईश्वरीय महावाक्य उसके कानों में गंजने लगे···

बेटी, "नथिंग न्यू"···तुम्हारे जीवन का अन्धकार दूर हो गया···तुम मेरी हो···मैंने तुम्हें पुनः स्वीकार कर लिया। अब अपने जीवन को पूर्ण निर्मल बनाओ और शिव शक्ति बनकर रावण को संसार से बाहर करने की प्रतिज्ञा करो। सब कुछ भूल जाओ। वह तुम्हारा पिछला जन्म था, जो पूरा हो गया, अब इस नव जीवन को दिव्य बनाओ और वह शान्त बैठी गीत गुनगुनाने लगी···

आज निर्मलता मनमें बसा के
मैं चल दी हूं मन को सजा के
उतरी पापों की गठरी शीश से
सच्ची कहानी पिता को बता के
मैंने योंही गमों को बुलाया
जीवन में बहुत दुख था पाया
अब खुशियों के क्षण लौट आये
मेरे दिल में नई राह लाये
अब हर पल को सफ़ल करूंगी
बीते युग का न ध्यान करूंगी
उस प्रियतम की राहों पे चल के
सच्ची योगिनी बन के चलूंगी

राजयोग भवन का निमन्त्रण

ब्र० कु० राजकुमारी, मजलिस पार्क, देहली

दिव्य ! भव्य ! श्वेत !
अलौकिक ! अनुपम ! अजेय !
शान्तिकुण्ड ! शीतल ! नयन तृप्त करता।
बरबस ! हठात् ! आकर्षण करता।

भारत का दिल दिल्ली महानगरी—
दिल्ली में चौक मायापुरी—
पर खड़ा 'मेसैन्जर' सा यह कौन ?
परमात्म संदेश संजोए मुस्काता मौन !

यह राजयोग तपस्या महल।
यह संगमयुगी राज महल !!
आप सबका आमन्त्रण करता।
बरबस अपनी ओर आकर्षण करता।।

ओ "वी० आई० पी० !" समय निकाले सबको
"वैरी इन्नोसैन्ट पर्सन !" इससे पहले निकालो समय को
आपको करना होगा बस इतना
समय देना है तीन दिन जितना !!

खुद आप, विश्व का बाप ! सुलझाने आया
सूत जो मूंझ गया था,
आत्मिक भाई-भाई हो आप ! सिखाने आया
जो नर भूल चुका;
घोर अन्धियारी रात संग में सोझरा लेकर आई
कठिन न समझ तपस्या ! सतयुग का संदेश लाई
नूतन प्रेरणा, नव चेतना यही निहित,
न मात्र समझना भवन इष्ट निर्मित,
'आबू'—"अब्बा के घर" का चिराग दिल्ली स्थित,
यह राजयोग 'तपस्या-महल !
आप सभी का आमन्त्रण करता।
बरबस अपनी ओर आकर्षण करता।।

दिव्य ! भव्य ! श्वेत !
अलौकिक ! अनूप ! अजेय !
शान्ति कुण्ड ! शीतल ! नयन तृप्त करता।
बरबस ! हठात् ! आकर्षण करता।

शाहे बेखबर

लेखक—ब्रह्माकुमार देवदत्त, भावनगर

इस लेख में एक ऐतिहासिक पात्र का आधार लेकर वर्तमान काल में परमात्मा शिव द्वारा किए जा रहे विश्व परिवर्तन के दिव्य कर्त्तव्य का संकेत किया है तथा अज्ञान अन्धकार में भटकी आत्माओं को पुनः पुनः चेतावनी दी गई है।

शाहजहाँ का बेटा औरंगज़ेब था। मुगलों के इतिहास में यह परम्परा सी बन गई थी कि गद्दी पाने के लिए हुमायूँ के उपरान्त सबने अपने भाईयों को कत्ल कराकर रक्तरंजित सिंहासन प्राप्त किए। औरंगज़ेब के शासनकाल में उसके बेटे अकबर द्वितीय ने औरंगज़ेब से बगावत की लेकिन असफल रहा और औरंगज़ेब के डर से मक्का भाग गया और आजीवन वहीं रहा। औरंगज़ेब के मरने पर शाहज़ादा मुअज़्ज़म अपने भाई आज़म को मरवाकर तख्त पर बैठा। अपने दूसरे भाई कामबख्स को मरवाने के लिए वह कई लाख सेना और तोप-खाना लेकर अजमेर के पास पीपाड़ की पहाड़ियों में घेरा डाले हुए था। उसका एक सेनापति महराबखां पच्चास-हज़ार की सेना लेकर अजमेर में तथा दूसरा सेनापति जफ़र पच्चीस हजार की सेना से जयपुर-जोधपुर को घेरे हुए था।

रात्री में तारे जगमगा रहे थे और हल्की ठण्डी पवन मन मोह रही थी। हिन्दुस्तान का बादशाह औरंगज़ेब का बेटा, जिस औरंगज़ेब की आयु का अधिक भाग दक्षिण में युद्ध करते रहने के कारण घोड़े की पीठ पर ही बीता था, का उत्तराधिकारी अपने खेमे में भयभीत था और पास खड़े सेवक को बार-बार पूछ रहा था।

भय के दो मुख्य कारण थे और उन दो में से एक का भी उत्तर देना जहाँ खिदमतगार के लिए कठिन था, वहाँ हरेक व्यक्ति आज भी शायद निरुत्तर ही रह जाये तो आश्चर्य नहीं।

पवन जब पहाड़ों से टकराती तो ज़ोर का शब्द होता था, बादशाह ने पूछा—"यह कैसी गर्जना है?" सेवक ने बताया कि हवा पहाड़ों से टकरा रही है; उसकी गर्जना है। तब तो बादशाह और भी डर गया और बोला—"यदि यह हवा मेरे खेमे (तम्बू) से टकरा जाए तो उसकी तो धज्जियां उड़ जायेंगी और मुझ शहनशाहे हिन्द, वारिस तख्ते-मुगलिया का क्या होगा?" जब सेवक ने बताया कि तम्बू मजबूती से बाँधा हुआ है तब भी उसे सन्तोष नहीं हुआ और सेवक को कहता है कि हवा तम्बू से टकराए या तम्बू उड़ जाए तो मैं तेरा सिर उतरवा दूँगा।

बादशाह को दूसरा भय शेर का सता रहा था। एक तरफ वह शहनशाहे हिंद होकर भी हवा को पहाड़ों से या तम्बू से टकराने से नहीं रोक पा रहा था दूसरा यदि शेर आ जाए तो शहनशाहे हिंद की जान का क्या होगा, वह भी चिंता थी। यदि शेरों का झुण्ड ही खेमे में घुस जाए तो क्या बनेगा क्योंकि सिपाहो के पास जो बन्दूक थी उसमें केवल एक ही गोली भरी जा सकती थी और एक गोली से शेरों का झुण्ड नहीं मारा जा सकता था। बादशाह को शायद इतना भी ज्ञान नहीं था कि शेर अकेला रहता है या झुण्ड में।

उपरोक्त डरपोक बादशाह को इतिहासकारों ने "शाहे-बेखबर" का नाम दिया है। राजपूत, मराठे तथा सिक्ख, सभी अपनी-अपनी शक्ति बढ़ा रहे थे, लेकिन बादशाह—शाहे-बेखबर इन सब बातों से अनजान अपने भाई को कत्ल करने के लिए सेना लेकर निकला था और अब हवा के पहाड़ों से टकराने तथा शेरों के हमले से डर रहा था।

शहनशाहे-हिन्द हवा के तम्बू से टकराने से भी भयभीत दुबका, सहमा सा खेमे में बैठा था, मीलों लम्बी शाही फौजों की छावनी, बेचारे बादशाह को हवा के टकराने से उत्पन्न भय से अभयदान नहीं दे पा रही थी और न ही बादशाह शेरों के झुण्ड द्वारा आक्रमण होने पर अपनी जान बचाने का कोई उपाय ही सोच पा रहा था। इसी बादशाह की एक भतीजी का नाम रजिया था जो अकबर द्वितीय की बेटी थी और पुरुषों की तरह ही वह घुड़सवारी तथा युद्ध विद्या में निपुण तथा निर्भय थी। अकबर द्वितीय के मक्का चले जाने पर वह वैरागिनी सी बन गई थी और सीधी और सच्ची बात बेखटक कहती थी। उसने आकर सलाम किया और चाँदनी रात में ठण्डी पवन का आनन्द लेने के लिए कहा। उसने यह भी राय दी कि हम भी मक्का चलकर खुदा की इबादत करें, बुढ़ापे में भाई को कत्ल कर अपने सिर पाप मत लो।

बादशाह ने पूछा—"यह सलतनत कौन सम्भालेगा ?" रजिया ने फिर समझाया कि आपके न रहने पर जो सम्भालेगा वह अब भी सम्भाल लेगा, अत: इस चिन्ता से मुक्त होकर राहे खुदा लीजिए।

बेचारी उस शहज़ादी की बात शाहे-बेखबर के गले नहीं उतरी। गिरते-पड़ते सिंहासन पर उसने पाँच वर्ष काटे और फिर संसार से विदा हुआ। न तो वह राज्य का सुख भोग सका और न ही खुदा की बन्दगी, इबादत कर अपने पाप भी न धो सका।

उपरोक्त उदाहरण तो सदियों पहले का है जब युद्ध की नीति ही कुछ दूसरी थी। उन दिनों न तो आज की तरह आकाश से अग्नि बरसाने वाले वायुयान थे और न ही टैंक तथा प्रेक्षास्त्र। न तो कीटाणु युद्ध का भय था और न ही परमाणु तथा हाईड्रोजन बम्बज़ ही थे। न डीज़ल-पेट्रोल से चलने वाले यानवाहन थे और न ही इलेक्ट्रिक ट्रेनें थीं। आज की तरह वैज्ञानिकों की प्रयोगशालाओं में लाखों की संख्या में कोई संहारक शस्त्रास्त्र थे और न ही लैसर किरणों का व कीटाणु युद्ध का भय था।

आज जबकि समूचे विश्व के महानाश के लिए विविध प्रकार की सामग्री तैयार हो चुकी है, पूरा ही विश्व जब मौत के कगार पर खड़ा है, जबकि हर व्यक्ति इस तथ्य को स्वीकार भी करता है कि नाश के साधन इतने तो आविष्कृत हो चुके हैं कि कुछ ही क्षणों में संसार से मानव ही नहीं, प्राणी मात्र की इतिश्री हो सकती है : "नागाशाकी" और "हीरोशीमा" का एक-एक कण मूक भाषा में जीवन और मृत्यु के अन्तर की साक्षी दे रहा है, दूसरी तरफ स्वयं विश्वपिता परमात्मा 'शिव' जो इस सृष्टि रूपी रंगमंच की धुरी अथवा केन्द्रबिन्दु हैं; निर्देशक तथा रचयिता हैं अवतरित होकर मानव को मुक्ति और जीवन मुक्ति का सत्य पथ सुझा रहे हैं। विश्व-नव-निर्माण के उनके दिव्य कर्त्तव्य का बहुत-सा कार्य पूर्ण भी हो चुका है तथा शेष पूर्ण होने जा रहा है। जैसे फांसी वाले अपराधी को फांसी का फंदा गले में डालने के पश्चात् केवल झटके का संकेत मिलने का इन्तज़ार रहता है; ऐसी ही स्थिति से आज मानव मात्र गुज़र रहा है, केवल मात्र बटन दबाने से ही विविध संहारक शस्त्रास्त्र स्वत: ही अपना कार्य कर देंगे। ऐसे क्षण-पल पर टिके जीवन को जब ईश्वरीय मर्यादाओं में व्यतीत करने का प्रभु पिता का निर्देश मिल रहा है और अनेकानेक आत्माओं ने उनकी आज्ञा को शिरोधार्य कर जीवन को दिव्य बना लिया है और शेष बहुत से लोग बनाने के पुरुषार्थ में लगे हुए हैं, तब भी दुनिया के बहुसंख्यक जन कुछ ऐसी गहरी नींद में सोए पड़े हैं कि ढोल बजाने पर भी उनकी बुद्धि के कपाट नहीं खुल पा रहे हैं।

कुछ लोग तो कलियुग को लाखों वर्ष शेष मानकर बेहोशी की भांग पिये बैठे हैं तो बहुत से ऐसे समय का इन्तज़ार कर रहे हैं जबकि उनके दुनियावी कार्य व्यवहार को चलाने के लिए मानो भगवान कोई दूसरा प्राणी भेजने वाला है जिसके आने के बाद वे अपना शेष समय ईश्वर चिंतन में लगायेंगे। कुछ लोग आत्मा ही को परमात्मा मानने के कारण प्रभु मिलन का उद्देश्य ही नहीं समझ पा रहे हैं तो अन्य परमात्मा को नेति-नेति कहकर ही छुटकारा पाना चाहते हैं। अन्यश्च "परमात्मा है ही नहीं" ऐसी अफ़ीम खाये दिन प्रतिदिन व्यस्तों

में अधिक से अधिक फंसते जा रहे हैं तो कुछ तथा कथित बुद्धिजीवी अपनी प्रयोगशालाओं की टेस्ट-ट्यूबों में ही परमात्मा को खोजना चाहते हैं। कितने ही हत् भाग्य जन, जाति और धर्म की संकीर्णता में फंसे हैं तो कतिपय तर्क-वितर्क के वितण्डावाद में उलझे हुए हैं। बहुत से भोले-भूले हुए भाई भजन-कीर्तन व माला के झमेले में फंसे हैं तो अनेक गुरु को ही गोविंद मानकर ईश्वर बेमुख लोगों को ईश्वर मानकर पूज रहे हैं। पुनश्च कुछ तो "शिवोऽहं तत्त्वाम्" का जाप कर रहे हैं तो कितने ही 'ब्रह्म' में लीन होने की कठिन साधना कर रहे हैं। शेष में से भी कुछ तो विकारों को जीतना ही असम्भव मानते हैं तो कईयों को यह चिन्ता सता रही है कि हमारे पवित्र रहने से सृष्टि कैसे चलेगी—मानो ऐसे लोगों को खुदा की तरफ से प्रमाणपत्र मिला हुआ हो कि उनके विषय-भोग के बिना सृष्टि नहीं चल सकेगी।

जिस प्रकार शाहे-बेखबर राज्य-प्रबन्ध से अन-जान मित्र और दुश्मन में भेद नहीं पा सका और भतीजी रखिया की ईबादत करने की राय को न मानकर "तख्ते-मुगलिया" की चिंता करता हुआ भी उस तख्त को बचाने का कोई ठोस उपाय नहीं कर सका और न ही "राहे-खुदा" ले सका। यहाँ तक कि उसके काल में दिल्ली दरबार षड़यन्त्रों का गढ़ बनता गया, "शहनशाहे हिन्द" न तो विद्रोहियों को कुचल सका और न ही सामने खड़ी मौत का ही प्रतिकार कर सका। जहाँ वह शेर को गोली मारने की बात बड़े फ़ख्र से कहता था, हवा के तम्बू से टकराने पर दूसरों को 'सज़ा-ए-मौत' देने की वात बड़े फ़ख्र से कहता था वह स्वयं ही काल के गोले का शिकार हुआ, प्रबलभावी तव्यता के वश स्वयं ही "सजाए-मौत" का कुसमय में ही हकदार बना। उसी प्रकार आज उपरोक्त प्रकार के कोटि-कोटि "शाहे-बेखबर" विनाश अथवा सृष्टि के महापरिवर्तन की बात से बेखबर प्रभु-मिलन तथा अतीन्द्रिय सुख से वंचित, मृत्यु से अमरता की ओर ले जाने वाले पथ से अनभिज्ञ, आँखों के होते हुए भी अज्ञानान्धकार में ठोकरें खाते हुए, जन्म जन्मान्तर के पापकर्मों के परिणाम स्वरूप विषय-वैतरणी नदी अथवा 'कुम्भीपाक नर्क' रूपी कलियुगी मैथुनी सृष्टि में दुख भोग रहे हैं। ऐसे त्रस्त जनों को "राहे-खुदा" बताने के लिए प्रजापिता ब्रह्मा कु० ई० वि० विद्यालय पिछले सैंतालीस वर्षों से विविध प्रवृत्तियों द्वारा कार्यरत है। "खुदा के तिली पर बहिश्त लेकर" आने का यही समय है जबकि स्वयं वह "नूरे-इलाही" अपने "नूर" से हरेक के नयनों को "नूरानी" बना रहा है। हे विश्व की सोई हुई आत्माओं, आओ! सभी उस प्यारे अविनाशी पिता से मिलन मनाकर अपना ईश्वरीय जन्म सिद्ध अधिकार ले लो, मनुष्य से देवता बनने का यह सहज पथ अपना लो! युगों से प्रभु मिलन की तड़पन मिटा लो, बिगड़ा हुआ भाग्य बना लो! देखो, शाहे-बेखबर की तरह कहीं समय चूक गए तो यह दुनिया जो चर्म-चक्षुओं से दिखाई दे रही है, नष्ट हो ही जाएगी, इसके साथ ही खुदा के सच्चे खिदमतगार बनने का सौभाग्य भी जाता रहेगा। अन्त में यह कहने का समय न मिले कि भगवान सृष्टि पर आये किन्तु हम पहचान ही न सके। इसलिए हे मानवात्माओं, जागो! चेतो, चेतो और चेतो! ध्यान रहे अब नहीं तो कभी नहीं, कभी नहीं और कभी भी नहीं!!!

□□

सन्तुष्टता का गुण सबसे बड़ा खजाना है—जिसके पास यह खजाना है वह सदा प्रसन्नता का अनुभव करता है। सन्तुष्टता सर्व प्राप्ति स्वरूप है। यही रूहानियत में स्थित रहने की विधि है।

सदा प्रसन्नचित वही रह सकते जिसके सब प्रश्न समाप्त हो गये हैं। ऐसे प्रसन्नचित बच्चे ही विश्व कल्याणी बन सकते हैं।

बैंगलोर में ब्र० कु० राधा, बहन भारती विष्णु वर्धन, प्रख्यात वेटरनल अभिनेत्री को चित्रों पर समझाते हुए।

विराट नगर (नेपाल) में शिव दर्शन प्रदर्शनी का उद्घाटन करती हुई देवकुमारी थापा जी, अध्यक्षा बालविकास।

जालना में पुस्तक विमोचन करते हुए भूतपूर्व राजमन्त्री (नशा बन्दी विभाग) चित्र में ब्र० कु० सुधा, डॉ० शंकर राव जी, भ्राता रजाक तालीब, श्रीराम शर्मा तथा अन्य दिखाई दे रहे हैं।

मुज़फ़रपुर में शिवध्वजारोहण पश्चात् पधारे महानुभावों को ब्र० कु० रानी जी संग्रहालय में चित्रों पर समझाते हुए।

अशोक विहार (दिल्ली) में हुए महाशिवरात्री महोत्सव कार्यक्रम का उद्घाटन निगम पार्षद भ्राता साहब सिंह वर्मा द्वारा किया गया। ब्र० कु० राज तथा ब्र० कु० ब्रिज-मोहन जी मंच पर विराजमान हैं।

हापुड़ में ४८ वें शिवरात्री महोत्सव समारोह के अध्यक्ष भ्राता कुंवर विजय पाल सिंह, एस० डी० एम० हापुड़ को ब्र० कु० चन्द्रशान्ता जी सौगात देते हुए।

महू में महाशिवरात्री के अवसर पर आयोजित "विश्व शान्ति सम्मेलन" को सम्बोधित करती हुई बहिन कृष्णा मेहरोत्रा (धर्म पत्नी मेजर जनरल एस० एल० मेहरोत्रा, कमान्डेन्ट एम० सी० टी० ई० महू)।

गोरेगांव (बम्बई) में महाशिवरात्री रहस्य दर्शन सम्मेलन में ब्र० कु० बहन भ्राता अनूपचन्द शाह, सदस्य विधान सभा का स्वागत करते हुए।

ग्वालियर में महाशिवरात्री समारोह में मुख्य अतिथि भ्राता डी० पी० पांडे डि० एवं सेशन जज को ईश्वरीय सौगात देते हुए भ्राता अग्रवाल जी।

पटेलनगर (नई दिल्ली) में हुए शिव जयन्ती कार्यक्रम के अवसर पर मंच पर (बाएं से) ब्र० कु० सुन्दरलाल जी, महानगर पार्षद मेवाराम आर्य जी, प्रो० ओमप्रकाश गुलाटी निगम पार्षद तथा ब्र० कु० प्रकाश विराजमान हैं।

लाटूर में आयोजित महाशिवरात्री पर्व का उद्घाटन दीप प्रज्जवलित करके किया जा रहा है।

शिमला में शिवरात्री के पावन पर्व पर डी० सी० महेन्द्र लाल जी तथा एस० डी० एम०, संग्रहालय का अवलोकन करते हुए।

उटाकमंड में शिवजयन्ती के अवसर पर ब्र० कु० शिव-कन्या शिव परमात्मा का परिचय देते हुए।

पूना में हुए शिवरात्री के कार्यक्रम में ब्र० कु० उर्मिला प्रवचन करते हुए।

← सम्बलपुर में प्रदर्शनी का उद्घाटन भ्राता शाहदेव साहू आ० डी० सी० सम्बलपुर द्वारा सम्पन्न हुआ।

आबू रोड में शिव जयन्ती के उपलक्ष्य में निकाली गई शांति यात्रा का एक दृश्य।

← अबोहर में शिव जयन्ती पर किरण बहन भगीरथ शर्मा जी फैक्ट्री मैनेजर को सौगात देते हुए।

← चित्रकूट धाम में आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी में ब्र० कु० निर्मला संत राजेश मोहम्मद को चित्रों द्वारा ईश्वरीय संदेश देते हुए।

पुरी में शिवजेयन्ती महोत्सव पर शिव-ध्वजारोहण वहां के डि० जज कर रहे हैं।

← शिवरात्रि के महोत्सव पर कारोली में शिव बाबा के ध्वजारोहण के बाद भ्राता पुरुषोत्तम लाल शर्मा, प्रधानाध्यापक माध्यमिक स्कूल के साथ अन्य भाई-बहन।

पाटन सेवा केन्द्र पर डा० शंकर भाई पटेल शिव ध्वजारोहण कर रहे हैं। पास में डा० बाबु भाई पटेल, गोपाल भाई पटेल व अन्य बहन-भाई खड़े हैं।

← हींगणघाट उपसेवाकेन्द्र की ओर से शिव रात्री के उपलक्ष में प्रवचन का कार्यक्रम रखा गया। ब्र० कु० शान्ता बहन जी प्रवचन कर रही हैं।

राजकोट में ४८वीं शिव जयन्ती के समारोह में वहां के उप महापौर भ्राता कान्ति भाई सम्बोधित करते हुए।

भभोरी गांव (इन्दौर) में आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उदघाटन गांव के माननीय पटेलराव दूबेजी कर रहे हैं।

देवाभूमि गीता पाठशाला (भुवनेश्वर) की ओर से निकाली गई शान्ति यात्रा का एक दृश्य।

पहाड़गंज (नई दिल्ली) में शिव जयन्ती के अवसर पर आयोजित शिव दर्शन आध्यात्मिक प्रदर्शनी में ब्र० कु० गायत्री चित्रों की समझानी देते हुए।

हिसार में किसान मेले में आध्यात्मिक प्रदर्शनी को एच. ए. यू. के. उपकुलपति डा० एल० डी० कटारिया ने देखा। भ्राता रामप्रसाद जी उन्हें ईश्वरीय सौगात देते हुए।

गोधरा में विश्व दर्शन आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए भ्राता गोपालसिंह सोलंकी, ब्र० कु० सुरेखा जी।

जलगांव में शिव जयन्ती महोत्सव पर आयोजित कार्यक्रम में मंच पर बाएं से ब्र० कु० मीनाक्षी, भ्राता भगवतराव चौधरी, पत्रकार, प्राचार्य मानसिंह पाटिल, तथा लोक सेवक भ्राता मधुकर राव चौधरी भू०पू० शिक्षामंत्री महाराष्ट्र, ब्र० कु० पार्वती तथा अन्य।

लखनऊ में शिव जयन्ती समारोह में (बाएं से) भ्राता महाबीर प्रसाद जी, ब्र० कु० वीरबाला, ब्र० कु० भगवती जी, सती जी तथा भ्राता रत्नलाल गुप्ता उपस्थित हैं।

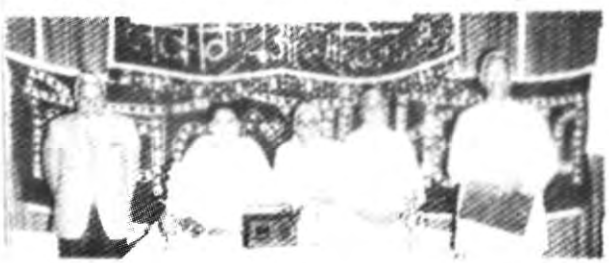

स म य

ब्र० कु० रामप्रसाद, बैतूल

समय एक ऐसी अव्यक्त वस्तु है जिसे समझना किसी साधारण मनुष्य के वश की बात नहीं है और जिसने समय को जाना है वही मनुष्य दुनिया में महान बन पाया है। पर मुख्य बात तो यही है कि समय की पहचान कैसे हो और इसकी पहचान कौन करा सकता है। यह कोई साधारण सवाल या छोटा-सा सवाल नहीं, जो कोई भी हल करके बता सके। यह तो एक अद्‌भुत प्रश्न है क्योंकि समय तो अनमोल वस्तु है। उसका वास्तविक मूल्य आंका नहीं जा सकता, इसके मूल्य को जानने के लिये बुद्धि का चहुँमुखी विकास चाहिये। बुद्धि का विकास तभी संभव है जब बुद्धि का कनेक्शन उस परमपिता से लगा हुआ रहे। तब कहीं हम समय के वास्तविक रूप को पहचान सकेंगे।

समय गतिशील है, इसकी गति काफी तेज होती है। ऐसा नहीं कि जैसे मोटर, रेल आदि वाहनों की गति सीमा होती है वैसे समय की भी कोई सीमा हो। समय की गति को कोई रोक नहीं सकता। समय चलायमान तो है ही, फिर भी एक रफ्तार से आगे बढ़ता रहता है। इसके लिये कहीं भी गति अवरोधक नहीं लगा सकते। समय किसी का इन्तजार नहीं करता चाहे वह राजा हो या भिखारी, छोटा हो या बड़ा, स्त्री हो व पुरुष वह किसी की परवाह न करते हुए अपने नियमानुसार आगे बढ़ता रहता है। इसे आगे बढ़ने से कोई भी रोक नहीं सकता। हम भले ही नदिया का बहता पानी बांध द्वारा, अग्नि को पानी द्वारा, हवा को ब्लेडर द्वारा या फुग्गे द्वारा रोक सकते हैं पर समय को किसी भी तरह किसी भी कीमत पर नहीं रोक सकते।

समय की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह आगे बढ़कर कभी वापस नहीं आता चाहे आप लाख प्रयत्न करो। चाहे मर मिटो, पर समय जो चला जाता है वह कभी वापस नहीं आता। एक बार चाहे घर से गया मेहमान भले ही वापस आ जाये पर आपकी लाख कोशिशों के बाद भी गया हुआ वही समय दुबारा नहीं आ सकता। जब ऐसी बड़ी भारी विशेषता समय की है तो सदा अपने साथी के रूप में साथ रक्खो। पर जब कोई समय को जानता पहचानता ही नहीं तब भला वो कैसे इसे साथी बना उसके साथ चल सकता है जबकि समय व्यक्त व अव्यक्त रूप से सबके लिये समान रूप से रहते हुए भी अलग-अलग प्रतीत होता है। कहते भी हैं—"हमारा समय खराब चल रहा है। हमारा तो समय ही साथ नहीं दे रहा है, ठीक है आप कह लो जो कुछ कहना है, जो करना है कर लो," इस प्रकार समय सभी को अलग-अलग रूप में भिन्न-भिन्न रूप में, स्थिति में प्रतीत होता है, पर रहता एक समान ही है। जैसे सूर्य एक है, वह सभी को समान रूप से अग्नि, ताप और प्रकाश देता है पर उसका भिन्न-भिन्न रूप से प्रभाव पड़ता है। कहीं रात कहीं दिन, कहीं सुबह कहीं शाम, कहीं धूप कहीं छाव लेकिन है तो एक ही। इसी प्रकार समय सभी के लिये समान है पर बुद्धि द्वारा अलग-अलग रूप में भिन्नित होता है।

समय का वास्तविक ज्ञान और उसका सही-सही मूल्य तो परमपिता शिव आकर स्वयं बता रहे हैं। वे कहते भी हैं समय सभी को महान बनाने के लिये स्वयं उपहार बनकर आया है, इस उपहार को स्वीकार करें नहीं तो यही समय उपहार की जगह तलवार नजर आयेगा। मानव जीवन आपको श्रेष्ठ तो मिला ही है, साथ-साथ संगम युग का श्रेष्ठ समय भी मिला है। यह समय हीरे से भी ज्यादा कीमती है। इस अनमोल समय को ही गंवा दिया तो मानो सब कुछ ही गंवा दिया और समय फिर ऐसा

बार-बार मिलता भी तो नहीं है, जो कोई ऐसे ही समय को बर्बाद करता है वह स्वयं ही बर्बाद हो जाता है। क्योंकि जो कुछ उसके पास था वह सब तो गवाँ दिया अब शेष क्या रहा। समय के साथ जो चलता है उसके अपनी मंजिल तक पहुँचाने में यह समय हर तरह से सहयोग प्रदान कर सहज ही लक्ष्य तक पहुँचा देता है। परन्तु जो समय के साथ न चलेगा उसे दोस्त के रूप में न समझ दुश्मन रूप में देखेगा तो समय भी उसे उसी प्रकार प्रतीत होगा। आखिर वे पछताते और यही कहते रह जायेंगे कि समय ने हमारा साथ नहीं दिया और बर्बाद कर दिया। इसीलिये इस संगम-युगी अमृत बेले के समय को हीरे तुल्य समझ अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाने में लग जायें अन्यथा समय चले जाने के बाद सिर्फ पछताते रह जाओगे और इस प्रकार पछताने से कोई फायदा तो होगा नहीं फिर क्यों कहते हैं कि हमारे पास समय नहीं है ? अरे ! समय तो सभी के पास है पर उसे समझा है ? अगर समझ लेते कि यह समय बहुत कीमती है तब फिर हमेशा समय के साथ सैट रहते।

परमात्मा शिव कहते हैं अगर यह अमूल्य घड़ियाँ व्यर्थ गवांओगे तो अन्त में पश्चाताप की अग्नि में जलना पड़ेगा। अभी भी आप सभी के लिये यह समय बहुत कीमती है, इस समय के साथ चलने के लिये समय आने के पूर्व ही अपने आप को तैयार रखो। ऐसा नहीं कि अभी मैं तैयार हो जाता हूँ, थोड़ा रुको ! समय किसी के लिये रुक नहीं सकता। भाग्य विधाता शिव बार-बार यही कहते हैं—

पालो अभी जो भी कुछ पाना है
वर्से का जन्म-सिद्ध अधिकार।
बीत जायेंगी ये अंतिम घड़ियाँ
फिर पछताओगे बार-बार॥

अभी तक हमने समय की पहचान न होने से काफी समय व्यर्थ गंवा दिया पर अब तो स्वयं परमात्मा ने हमें समय के महत्त्व को बताया फिर क्यों न हम अधिक से अधिक समय ईश्वरीय याद में लगायें। समय के लिए गायन है—"अभी नहीं तो कभी नहीं।" समय हम सभी के लिये विशेष निमंत्रण लेकर आया है, उस निमंत्रण को जिसने स्वीकार किया वह ऊँच से ऊँच जगह अपनी मंजिल तक पहुँचने में सफल रहा है और जिसने समय के इस स्नेह पूर्ण निमंत्रण को जो ईश्वर के द्वारा समय के माध्यम से आप तक पहुँचाया, पर आपने स्वीकार नहीं किया तब क्या होगा ? अपने लक्ष्य से विमुख होकर मंजिल तक पहुँच नहीं सकते, फिर दोष किसी और को देंगे लेकिन अपनी गलती स्वीकार नहीं करेंगे। समय के साथ जिन्दगी है अगर रुके तो समझो गिरे। इसलिये समय के साथ-साथ चलते रहो, कभी थको नहीं, आखिर एक न एक दिन तुम अपनी मंजिल तक पहुँचने में सफल तो जरूर होगे ना। ये समय आपको अपनी मंज़िल तक पहुँचा कर ही दम लेगा।

बात ये न पूछना समय से कभी।
चलना है और कितना, मंजिल कितनी दूर अभी॥

समय ही प्रत्येक वस्तु की महानता प्रगट करता है। कौनसी चीज़ किस समय काम आ सकती है यह सब समय ही तो बतलाता है। इसीलिये परमात्मा शिव कहते हैं—"हे सिकीलधे लाडले बच्चो, इस सुहावने संगमयुग की एक-एक अमूल्य घड़ी को सफल कर अपने भाग्य को उज्जवल बनाओ, अपने भाग्य की तस्वीर जैसी भी बनाना चाहो अभी बना सकते हो।" समय ही जीवन है, समय ही जीवन का आधार है, समय बिना तो सभी बेकार है। हर चीज समय पर ही अच्छी लगती है। हर कर्म समय पर ही किये जाते हैं। समय के बिना संसार नहीं, फिर हमने क्यों समय को इतना छोटा समझ रखा है। अगर विस्तार से समय का अध्ययन कर उसकी गहराई तक पहुँचें और सोचें तब हमें वास्तविक समय की अनुभूति हो सकेगी और तभी हम वास्तविक समय के अस्तित्व को जान सकेंगे कि यह समय सचमुच हीरे से भी ज्यादा कीमती है। जो इस समय की कीमत करेगा, समय उसकी कीमत करेगा। अब बाबा पूछते हैं—

समय एक उपहार है क्या तुम्हें स्वीकार है ?
हम यह न कहें—
क्या करें बुखार है इसीलिये लाचार है॥

समय जीवन को नई दिशा देता है क्योंकि

(शेष पृष्ठ २८ पर)

राजयोग द्वारा सुस्वास्थ्य की प्राप्ति

डॉ० गिरीश पटेल, मनोरोग चिकित्सक, बम्बई

वर्तमान युग में छोटा-बड़ा, स्त्री-पुरुष, गरीब-अमीर, हर व्यक्ति एक या दूसरे प्रकार की चिन्ताओं से ग्रसित है। मानसिक तनाव से बहुत कम लोग बच पाते हैं। हर रोज़ हमें शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक दृष्टिकोण से तनाव का सामना करना पड़ता है।

तनाव मस्तिष्क के छोटे से भाग हायपोथेलामस (Hypothalamus) पर विशेष रूप से असर करता है। हायपोथेलामस में अव्यवस्था पैदा होने के कारण शरीर की विभिन्न प्रणालियों में विक्षेप उत्पन्न होता है। हायपोथेलामस के वृद्धिकारी अंश (Releasing Factor) एवं न्यूनताकारी अंश (Inhibiting Factor) कम ज्यादा होने से पियुशग्रंथी के होरमोन्स (Hormons) भी कम ज्यादा हो जाते हैं। इसका प्रभाव शरीर की सभी अतःस्राव (Endocrine) ग्रन्थियों पर होता है तथा शरीर की कार्यवाही में भी विक्षेप उत्पन्न होता है। पाचन-क्रिया, हृदयवाहीका प्रणाली, श्वास-प्रक्रिया आदि आदि शारीरिक प्रक्रियाओं पर इसका घातक प्रभाव पड़ता है।

चिन्तायें व्यक्ति की अनुकंपी (Sympathetic) एवं परानुकंपी (Parasympathetic) प्रणाली में असन्तुलन पैदा करती हैं। इसके कारण डायेरिया (Diarrhoea) से लेकर हार्टअटेक (Heart attack) तक की बीमारियां हो सकती हैं। परानुकंपी प्रणाली तेज़ी से कार्य करती है, तब व्यक्ति को डायेरिया हो सकता है। और जब अनुकंपी प्रणाली ज्यादा कार्य करती है तो रक्तदाब में वृद्धि, अनजायना का दर्द एवं हार्टअटैक जैसी घातक बीमारियां हो सकती हैं।

तनाव हमारे मस्तिष्क पर भी प्रभाव डालता है। रेटिक्युलर फोरमेशन (Reticular Formation) में विक्षेप उत्पन्न होने से व्यक्ति के मसल्स आदि पर भी अनैच्छिक प्रभाव पड़ता है। चिंतायें स्टीरोइड होरमोन्स का प्रमाण बढ़ा देती हैं, इसलिए शरीर की रोग प्रतिकारक शक्ति भी कम हो जाती है और व्यक्ति कीटाणु जन्य रोगों का भोगी भी बन सकता है। ऊपर निर्दिष्ट रूप से चिंता अनेक रोगों को उत्पन्न करती है। ६० से ७०% बीमारियों का मूल, मानसिक तनाव है।

चिन्तायें एक दो दिन में रोग उत्पन्न नहीं करतीं लेकिन जब उसका प्रभाव काफी समय तक पड़ता है, तब शारीरिक अंगों की जमा शक्ति कम हो जाती है और अन्त में रोग के चिन्ह भी दिखाई देते हैं। मानसिक तनाव से मुक्त होने के लिए व्यक्ति तनाव उत्पन्न करने वाली परिस्थितियों से दूर भागता है या धूम्रपान, मद्यपान आदि नशीली चीज़ों का सेवन करता है, परन्तु यह योग्य साधन नहीं हैं। क्योंकि अगर हम तनाव उत्पन्न करने वाली परिस्थितियों से दूर भागने की कोशिश करेंगे, या भागेंगे तो वर्तमान स्पर्धा के युग में, प्रगति नहीं कर सकेंगे। धूम्रपान, मद्यपान आदि से भी हम कुछ पल के लिये चिन्ताओं को भूल जाते हैं। लेकिन नशा दूर होने के बाद फिर से उन्हीं परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। इसके अलावा नशीली चीज़ों के सेवन से हमारे स्वास्थ्य पर भी अनेक घातक परिणाम होते हैं। इसलिए यह भी चिन्ताओं से मुक्त होने का योग्य उपाय नहीं है।

मनोवैज्ञानिक ज्ञान के अनुसार चिन्ताओं से मुक्त होने के लिये तनाव उत्पन्न करने वाली परिस्थितियों के प्रति हमें अपना दृष्टिकोण परिवर्तन करना चाहिए। एवं तनाव का सामना करने के लिए मानसिक, शारीरिक शक्ति में वृद्धि करनी

चाहिए।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय में सिखाये जाने वाला आध्यात्मिक ज्ञान एवं सहज राजयोग के अभ्यास से इन दोनों रीति से सहायता मिलती है।

आध्यात्मिक ज्ञान का अनुभव होने से तनाव पैदा करने वाली अनेक परिस्थितियों के प्रति व्यक्ति का दृष्टिकोण परिवर्तन हो जाता है। उदाहरण के तौर पर शारीरिक व्याधि होने पर व्यक्ति सोचता है कि यह व्याधि तो शरीर को हुई है, न कि आत्मा को। मैं आत्मा तो शरीर से भिन्न एक दिव्य चैतन्य शक्ति हूँ। अजर, अमर एवं अविनाशी हूँ। वास्तव में मैं सत्‌चित् आनंद स्वरूप हूँ। शरीक ठीक प्रकार से कार्य न करे, तो भी मैं आत्मा स्वस्थता से कार्य कर सकती हूँ।

अगर राजयोगी के किसी नजदीकी सम्बन्धी की मृत्यु हो जाती है, ऐसे समय वह सोचता है कि मेरा स्नेह तो उनकी आत्मा से था न कि शरीर से। और आत्मा तो अविनाशी है जो एक शरीर छोड़ दूसरा धारण करती है। इसलिए मेरा जिससे स्नेह था वह आत्मा तो अब भी जीवित है। इस प्रकार वह अपने को अत्यन्त तनाव उत्पन्न करने वाली परिस्थिति में भी शान्त रखना है। ऊपर निर्दिष्ठ रीति से सहज राजयोग के अभ्यास से एक अभ्यासी तनाव उत्पन्न करने वाली परिस्थिति से दूर नहीं भागता है, बल्कि उस परिस्थिति के प्रति अपने दृष्टिकोण में परिवर्तन लाता है।

सहज राजयोग के अभ्यास से मानसिक-शारीरिक शक्ति में भी वृद्धि होती है। वैज्ञानिक परीक्षण के दौरान भी राजयोग के अभ्यास से शरीर की रोग प्रतिकारक शक्ति में वृद्धि पाई गयी है। योग के अभ्यास से शरीर के स्टीरोइड होरमोन्स की मात्रा कम होती है। जिस कारण रोग प्रतिकारक शक्ति में वृद्धि होती है। मन सन्तुलित एवं स्वस्थ बनता है। तथा मानसिक शक्ति में वृद्धि होती है। इसके फलस्वरूप हम चिन्ताओं का योग्य रीति सामना कर सकते हैं। इन उपलब्धियों के कारण व्यक्ति मानसिक-शारीरिक रोगों से ग्रसित होने से बच सकता है तथा सुस्वास्थ्य बनाये रखने में भी मदद मिलती है। ××

शिव ही तो है

रामकुँवर सिंह, प्रशासन अधिकारी, वर्धा

"कदम-कदम पर पदम मिल जाते हैं,
मुक्ति का दाता शिव ही तो है।
प्यूरिटी से पर्सनालिटी सज जाती है,
पतित पावन एक शिव ही तो है।
अपवित्रता से माया खा जाती है,
हम सबका सहारा शिव ही तो है।
शुद्ध संकल्प से शांति मिल जाती है,
शांति का दाता शिव ही तो है।
आत्मज्ञान से भाईचारा हो जाता है,
ज्ञान का सागर शिव ही तो है।
श्रीमत से खुशी मिल जाती है,
खुशी का दाता शिव ही तो है।
मनमत से माया दुःखी बनाती है,
दुखहर्ता-सुखकर्ता शिव ही तो है।

(पृष्ठ २६ का शेष)

समय बहुत शक्तिशाली है व बलवान है। उसके साथ जो चलेगा वह इस जग में महान है। समय के बिना संसार का कोई भी कार्य सुचारू रूप से नहीं चल सकता, इस दुनिया का संचालन भी इस समय रूपी धुरी पर निर्भर है। जब सब कुछ ही समय पर आधारित है फिर क्यों न हम समय के महत्त्व को समझें। अपने भाग्य को बनाने में विलम्ब क्यों ? शिव बाबा भी तो यही कहते हैं समय बहुत कम है, गफलत मत करो। इस प्रकार हम देखते हैं कि पूरा संसार ही समय पर चल रहा है। तब हम और आप क्यों न समय के साथ चलें।

समय समय की बात है
समझ-समझ का फेर।
मंजिल अपनी दूर है,
फिर क्यूं करता देर॥

आध्यात्मिक सेवा समाचार

ब्र० कु० लक्ष्मण, सत्यनारायण, कृष्णा नगर, देहली द्वारा संकलित

फरवरी मास में सर्व भारत तथा विदेश में शिवजयन्ती के अवसर पर भिन्न-भिन्न साधनों द्वारा शिव बाबा का परिचय दिया गया। कुछ समाचार निम्न हैं—

इन्दौर—शिवरात्रि के अवसर पर मिनी मधुवन में शिवरात्रि का कार्यक्रम रखा गया जिसमें योग शिविर एवं विश्व शांति सम्मेलन से लौटे सभी भाई-बहिन एकत्रित हुए तथा ब्रह्माकुमारी हेमा बहन ने प्रवचन किया।

बिलासपुर—महाशिवरात्रि के उपलक्ष में बिलासपुर में "मानव जागृति आध्यात्मिक सम्मेलन" किया गया जिसके मुख्य अतिथि इंडियन मेडिकल एसोसियेशन के चेयरमेन भ्राता एस० एन० शुक्ला जी तथा प्रमुख वक्ता म० प्र० के जोनल डायरेक्टर राजयोगी ब्रह्माकुमार ओमप्रकाश जी थे।

जबलपुर—शिवरात्रि के अवसर पर मिलिट्री अधिकारियों द्वारा मिलिट्री स्टेशन वर्कशॉप में प्रवचन करने का निमंत्रण मिला था। ब्रह्माकुमारी सरोज बहन ने शिव और शिवरात्रि के महत्त्व को स्पष्ट किया।

रायपुर—स्थानीय महिला मण्डल के निमंत्रण पर ब्रह्माकुमारी करुणा बहन ने प्रवचन किया, ग्राम जारा के निमंत्रण पर ग्रामवासियों द्वारा रचित शिवयज्ञ का ब्रह्माकुमारी करुणा बहन ने विधिवत उद्घाटन किया एवं दो सत्रों में प्रवचन किये, हार्दिक निमंत्रण भी दिया।

कोटा—राजस्थान सरकार के खेलमंत्री भ्राता रामकिशन वर्मा, "इन्स्टमेन्टेशन लिमिटेड के मेनेजिंग डायरेक्टर ए० के० धींगरा, डिविजनल मेनेजर रेलवे आदि को ईश्वरीय संदेश दिया।

महू—महू सेवाकेन्द्र की ओर से मिलिट्री के 6 गढ़वाल रायफल्स के मंदिर में ब्रह्माकुमारी आशा बहन ने पाँच दिन तक प्रवचन किया, महाशिवरात्रि के उपलक्ष में सेवाकेन्द्र पर विश्व शांति सम्मेलन रखा गया, जिसकी मुख्य अतिथि मेजर जनरल एस० एल० मेहरोत्रा की धर्मपत्नि बहन कृष्णा मेहरोत्रा थी व विशेष अतिथि केन्टोन्मेन्ट बोर्ड महू के एक्जीक्युटिव ऑफिसर एस० एल० दूबे थे।

सेंन्धवा—ग्राम लोनारा के राम मंदिर में जनता के निमंत्रण पर ब्रह्माकुमारी शशी बहन ने प्रवचन किया। प्रवचन से प्रभावित होकर ग्रामवासियों ने शीघ्र ही गाँव में प्रदर्शनी लगाने का आग्रह किया।

झारसुगुडा—सेवाकेन्द्र की ओर से बेलपहार में चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई जिसका उद्घाटन बेलपहार "री" फैक्ट्री के जनरल मेनेजर भ्राता डी० एम० पटनायक ने किया।

भिलाईनगर—सेवाकेन्द्र की ओर से महाशिवरात्रि पर्व के उपलक्ष में मानव जागृति आध्यात्मिक सम्मेलन का आयोजन वहाँ के जैन भवन में किया गया। जिसका उद्घाटन स्टील प्लाण्ट के जनरल मैनेजर भ्राता एस० आ० रामाकृष्णन ने दीप जलाकर किया। सम्मेलन में मुख्य अतिथि के रूप में उच्च शिक्षा मंत्री माननीय मोतीलाल वोरा जी पधारे थे।

बेलगाम—प्राप्त समाचार के अनुसार शिवरात्रि महोत्सव पर शहर के मुख्य मार्गों से एक शान्ति यात्रा निकाली गई। शहर के प्रसिद्ध हाल में सार्वजनिक कार्यक्रम रखा गया। आबू कान्फ्रेन्स से लाभान्वित कुछ प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने अपने अनुभव सुनावे।

मोदीनगर—समाचार मिला है कि "विवेकानंद कुष्ट आश्रम" में वहाँ की संस्थापिका बहन गायत्री मोदी की अध्यक्षता में कोढ़ियों के बीच शिवरात्रि के उपलक्ष में कार्यक्रम चला, इस अवसर पर जिला मेजिस्ट्रेट भ्राता जोजफ जी तथा डा० नलिनी जी उपस्थित थीं। उत्तर प्रदेश के कृषि मंत्री भ्राता यशुपाल सिंह जी को भी ईश्वरीय सन्देश तथा साहित्य भेंट किया गया।

इलाहाबाद—समाचार मिला है कि शिवरात्रि महोत्सव के उपलक्ष में जायसवाल इन्टर कालेज के हाल में सार्वजनिक कार्यक्रम रखा गया जिसमें वहाँ के सचिव लोक सेवा आयोग भ्राता एल० आर० सिंह सपरिवार पधारे।

कटक—प्राप्त समाचार के अनुसार कटक के दोनों सेवाकेन्द्रों पर शिवरात्रि महोत्सव बड़े ही धूमधाम से मनाया गया। शिव सन्देश वहाँ के रेडियो स्टेशन द्वारा प्रसारित हुआ। मुख्य समाचार पत्रों में भी शिवरात्रि के वास्तविक रहस्य पर लेख छपे।

गोरखपुर—सेवाकेन्द्र की ओर से मोहद्दीपुर, गोरखपुर में "शिव दर्शन आध्यात्मिक प्रदर्शनी" का आयोजन किया गया। दिव्य गीत, संगीत एवं बिजली की झालरों की सजावट से परिपूर्ण यह प्रदर्शनी का कार्यक्रम धर्मानुरागी हजारों नर-नारियों के आकर्षण का केन्द्र रहा।

दिल्ली-पाण्डव भवन—समाचार मिला है कि शिवजयन्ती के उपलक्ष में ३ चैतन्य झाकियां सजाई गई जो आने वाली जनता का एकमात्र आकर्षण का केन्द्र थी। पाण्डव भवन के हाल में सार्वजनिक कार्यक्रम रखा गया। शिवरात्रि के वास्तविक रहस्य पर दो प्रवचन चले।

कलकत्ता—समाचार मिला है कि रायबगान, कोननगर और शयामनगर सेवाकेन्द्रों पर सार्वजनिक कार्यक्रम रखे गये। जिसमें अनेक प्रतिष्ठित व्यक्तियों को शिव सन्देश प्राप्त हुआ। शिव जयन्ती से पूर्व हिन्दी हाईस्कूल बेरकपुर में प्रदर्शनी रखी गई, दो तीन जगह प्रोजेक्टर शो का कार्यक्रम हुआ। हावड़ा में प्रसिद्ध शिव शंकर मन्दिर में भी एक दिन की प्रदर्शनी द्वारा हजारों आत्माओं को सन्देश प्राप्त हुआ।

दिल्ली मजलिस पार्क—शिव जयन्ती के उपलक्ष में दो सप्ताह पूर्व ही प्रवचन माला प्रारम्भ की गई। आजादपुर, सूरजनगर, केवलपार्क, टीचर कालोनी, बिलासपुर, सिरसपुर आदि दस स्थानों पर प्रवचनों द्वारा शिव अवतरण का शुभ सन्देश दिया गया।

भोपाल—शिव जयन्ती के अवसर पर लगातार तीन कार्यक्रम आयोजित किये गये। इस कार्यक्रम में भ्राता मुनिप्रसाद शुक्ला जी, राजस्वमंत्री, एज्यूकेशन बोर्ड के चेयरमैन भ्राता बी० डी० अग्रवाल जी तथा दैनिक भास्कर के प्रोपराइटर भ्राता बी० डी० अग्रवाल जी मुख्य अतिथि के रूप में पधारे।

पूना—शिव जयंती के उपलक्ष में पूना के महाराष्ट्र साहित्य परीषद के हाल में सार्वजनिक कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें महाशिवरात्री का आध्यात्मिक रहस्य, राजयोग विषय पर प्रकाश डाला गया।

पटना—पटना सेवाकेन्द्र की ओर से शिव जयन्ती उत्सव बड़े धूमधाम से मनाया गया नागेश्वर कालोनी में शिव दर्शन प्रदर्शनी एवं राजयोग शिविर का आयोजन किया गया। इसके अलावा हनुमान नगर कंकर बाग में चरित्र निर्माण प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

अहमदाबाद नारायणपुरा—सेवा केन्द्र की ओर से शिव जयन्ती के अवसर पर 'एक दिवसीय' परमात्मा परिचय शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का उद्घाटन प्रसिद्ध कित्तनाचार्य स्वामी देवेन्द्र विजय जी ने किया।

अहमदाबाद मणिनगर—सेवा केन्द्र की ओर से शिव जयन्ती बड़े ही धूमधाम से मनायी गयी। इस दिन सेवाकेन्द्र पर परमात्म परिचय योग शिविर का आयोजन किया गया। सेवा केन्द्र पर ही एक आध्यात्मिक धर्म सम्मेलन का आयोजन किया गया।

बुरहानपुर—शिवरात्री पर जलाना में पंचमुखी महादेव मन्दिर के प्रांगण में एक हाल में सुन्दर "शिव शंकर में महान अन्तर" की झाँकी सजाई गयी। इसके अलावा रावेर, भुसावल, मलकापुर सभी तरफ शिव रात्री धूमधाम से मनायी गयी।

मोरीशियस— समाचार मिला है कि मोरीशियस पार्लियामेन्ट द्वारा मोरीशियस सरकार ने "प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय," वर्ल्ड स्प्रीचुअल यूनिवर्सिटी ट्रस्ट, के नाम से मान्यता दी है। साथ-साथ इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय को हर प्रकार के शुल्क, डियुटी या कर देने से भी मुक्त किया है। विद्यालय द्वारा पिछले १० वर्षों से अथक ईश्वरीय सेवा कर राजयोग द्वारा चरित्र उत्थान का जो महान कार्य चल रहा है, उसके फलस्वरूप वहाँ की सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त हुई है।

नागपुर— प्राप्त समाचार के अनुसार सेवाकेन्द्र की ओर से सर्व धर्म सम्मेलन का आयोजन धीरज कन्या विद्यालय के प्रांगण में राजस्थान जोन इन्चार्ज ब्र० कु० रत्नमोहनी जी की अध्यक्षता में किया गया। इस अवसर पर ७ अन्य धर्मों के वक्तागण पधारे। देहली से पधारी ब्र० कु० आशा बहन ने "धर्म एवं भावनात्मक एकता" नामक विषय पर प्रवचन किया। सभी धर्म नेताओं ने अपने-अपने धर्म की विस्तृत मान्यतायें बताईं। अन्त में सबको स्वधर्म में टिकाते हुए राजयोग अभ्यास कराया गया।

दिल्ली चांदनी चौक—शिव जयन्ती का पावन पर्व दरिया गंज, चाँदनी चौक और खारीबावली सेवाकेन्द्रों पर धूमधाम से मनाया गया। शिवरात्रि का रहस्य एवं इसे मनाने की विधि पर प्रवचन हुए, गीत, सामूहिक योग तथा फिल्म भी दिखाई गई।

बम्बई घाटकोपर—समाचार मिला है कि घाटकोपर की सुप्रसिद्ध और भव्य राष्ट्रीय शाला में से एक पीस मार्च निकाली गई। राष्ट्रीय शाला के भव्य वातानुकूल

सभागृह में सार्वजनिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर महाराष्ट्र के श्रम, यातायात और जेल मंत्री प्रो० एस० एम० आर० असीर जी पधारे।

अलवर—समाचार मिला है कि अलवर जैन समाज की ओर से एक सर्व धर्म सम्मेलन का आयोजन किया गया—जिसका विषय था सभी धर्मों का सार एक है। इस सम्मेलन में सभी धर्मों के प्रमुख आचार्यों के साथ-साथ ब्र० कु० ईश्वरीय विश्व विद्यालय को भी आमन्त्रित किया गया।

गोहाटी—प्राप्त समाचार के अनुसार शिव जयन्ती महोत्सव के उपलक्ष में सेवाकेन्द्र पर ध्वज फहराया गया। ब्रह्मपुत्रा नदी के बीच उमानंद मन्दिर में आयोजित एक विशाल मेले में प्रदर्शनी भी लगाई गई। काफी संख्या में भक्तों ने शिव परमात्मा का सन्देश प्राप्त किया।

ग्वालियर—समाचार मिला है कि नगर के मेयर तथा चैम्बर आफ कामर्स म०प्र०के अध्यक्ष द्वारा शिव परमात्मा का ध्वज लहराया गया। इन्होंने सेवाकेन्द्र का शान्त एवं पवित्र वातावरण देखने के पश्चात शान्ति और पवित्रता का अनुभव प्राप्त किए।

दिल्ली-अशोक विहार—समाचार मिला है कि शिवरात्रि के शुभ अवसर पर उपनगरी लारेन्स रोड में एक गीता पाठशाला का शुभारम्भ किया गया। वहाँ के स्थानीय कम्युनिटी हाल में एक भव्य समारोह का आयोजन हुआ जिसका उद्घाटन निगम पार्षद श्री साहब सिंह वर्मा द्वारा सम्पन्न हुआ।

हैदराबाद—प्राप्त समाचार के अनुसार सर्व धर्मो की आत्माओं के पिता निराकार शिव के अवतरण का दिव्य सन्देश देने के लिए एक सुन्दर झाँकी सजाकर विशाल शोभा यात्रा निकाली गई। सायंकाल सेवाकेन्द्र पर सार्वजनिक कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें "शिव जयन्ती के आध्यात्मिक महत्व" पर प्रवचन, गीत एवं फिल्म शो आदि का कार्यक्रम चला। इस अवसर पर भ्राता राम रेड्डी जी, आई० ए० एस०, मुख्य अतिथि के रूप में एवं भ्राता के० प्रभाकर रेडी जी (आन्ध्रप्रदेश के भूतपूर्व गृहमंत्री) अध्यक्ष के रूप में पधारे।

गाजियाबाद—लोहियानगर सेवाकेन्द्र की ओर से प्राप्त समाचार के अनुसार वहाँ के बस स्टेण्ड पर शिव मन्दिर में शिवदर्शन प्रदर्शनी का आयोजन बड़े ही धूमधाम से किया गया। सैकड़ों शिव भक्तों ने शिव परमात्मा का दर्शन कराने वाली इस प्रदर्शनी का अवलोकन किया।

दिल्ली नरेला—समाचार मिला है कि राजकीय स्कूलों में वरिष्ट अध्यापकों का ईश्वरीय ज्ञान एवं राजयोग का साप्ताहिक पाठ्यक्रम का अध्ययन कराया गया है। उन सभी अध्यापकों का एक सामूहिक आध्यात्मिक कार्यक्रम स्कूल के एक बड़े हाल में रखा गया जिसमें ३ प्रधानाचार्य तथा लगभग ६०-७० अध्यापक उपस्थित थे। अनुभवी राजयोगी भाई बहनों ने इन सबको अपने-अपने अनुभव सुनाये।

दिल्ली पटेलनगर—प्राप्त समाचार के अनुसार ईस्ट एवं वेस्ट पटेल नगर से एक प्रभातफेरी निकाली गई, जिसमें शिव एवं शंकर के अन्तर की झाँकी सजाई गई थी। वेस्ट पटेलनगर में खन्ना मार्केट के निकट चार दिन के लिए एक भव्य "शिव दर्शन" प्रदर्शनी लगाई गई जिसमें अति सुन्दर माडलों से तीन झाकियाँ सजाई गई थीं। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन इस क्षेत्र के महानगर पार्षद भ्राता मेवाराम आर्या जी ने किया।

गुलबर्गा— समाचार मिला है कि महानगर के बीच सुपर मार्केट के विशाल सुन्दर स्थान पर बने हाल में शिव जयन्ती के उपलक्ष में सार्वजनिक कार्यक्रम रखा गया। शहर के अनेक गणमान्य व्यक्ति इस अवसर पर श्रोता के रूप में पधारे। कार्यक्रम का विवरण कई स्थानीय पत्रों में छपा। यादगीर, शाहबाद, लातूर, महबूब नगर आदि सेवाकेन्द्रों पर भी धूमधाम से यह त्योहार मनाया गया।

आबू पर्वत—परमात्मा शिव का ज्योतिबिन्दू निशान से बना हुआ सुन्दर ध्वज ओमशान्ति भवन तथा पांडव भवन में लहराया गया। परमात्मा शिव की श्रीमत प्रमाण इस दिवस पर हरेक ने अपने आप से व्रत लिया कि हम कभी भी व्यर्थ संकल्प रूपी भोजन स्वीकार नहीं करेंगे। प्रात: १० बजे पाण्डव भवन से पीस मार्च करते हुए आध्यात्मिक संग्रहालय में पहुंचे। वहां पर भी शिव पिता का झण्डा लहराया गया।

आस्ट्रेलिया—समाचार मिला है कि सिडनी में विशाल रूप से एक पीस पैवेलियन बनाया गया। जो वहाँ के प्रसिद्ध मेले में एक मास तक चलता रहा। इस पैवेलियन का उद्घाटन मैलबोर्न से पधारे सेनेटर डोनचीप द्वारा सम्पन्न हुआ। इस पैवेलियन में युनाइटेड नेशन्स एसोसियेशन, युनीसेफ, कम्युनिटी ग्रुप्स, वैज्ञानिक तथा राजनेताओं आदि ने आकर अपने-अपने विचार प्रस्तुत किये। इस पैवेलियन द्वारा उत्पन्न शान्ति के वायब्रेशन्स आने

वाले लोगों पर गहरी छाप डाल रहे थे।

टाटानगर—समाचार मिला है कि टाटानगर में ईश्वरीय सेवायें बहुत जोरशोर से चल रही हैं, वहाँ के प्रसिद्ध जैन भवन में प्रोजेक्टर शो तथा प्रवचन का कार्यक्रम चला। वहाँ के लोकल पेपर उदितवाणी में भी इस प्रोग्राम के बारे में प्रकाशित किया गया। दाई गुटु में एक "चण्डी यज्ञ" में दो दिन की प्रदर्शनी, प्रोजेक्टर तथा प्रवचन का कार्यक्रम चला।

मालवीयानगर—दिल्ली से प्राप्त समाचार के अनुसार मालवीय नगर के समीप खानपुर नामक गाँव में एक विशाल चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। यह प्रदर्शनी ज्ञान शिव शक्ति मन्दिर में लगाई गई। जिसके लिए पर्चे और पोस्टर आदि जगह-जगह लगाये गये। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन भ्राता सज्जन कुमार (एम० पी०) जी द्वारा सम्पन्न हुआ।

आबूरोड स्थित स्थानीय सेवाकेन्द्र की ओर से इस अवसर पर एक विशाल शान्ति यात्रा भी शहर के मुख्य मार्गों से निकाली गई। जिसमें ४० देशों से आये हुए कुछ विदेशी राजयोगी भाई बहनों ने भाग लिया। शाम को इसी उपलक्ष में आयोजित सार्वजनिक कार्यक्रम वहाँ की प्रसिद्ध गार्डस कालोनी के खुले मैदान में किया गया। शिव रात्रि का आध्यात्मिक रहस्य प्रवचनों के द्वारा स्पष्ट करने के पश्चात विदेशी कलाकारों ने आध्यात्मिक ड्रामा भी प्रस्तुत किया।

बम्बई कोलाबा—प्राप्त समाचार के अनुसार ४८ वीं त्रिमूर्ति शिव जयन्ती के उपलक्ष में वहाँ के प्रसिद्ध के० सी० कालेज के हाल में आयोजित सार्वजनिक कार्यक्रम में महाराष्ट्र के मुख्य मंत्री बसन्त दादा पाटिल जी पधारे थे। उन्होंने ब्र० कु० ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा प्रस्तावित पीस चार्टर की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए इसका समर्थन किया।

जयपुर—प्राप्त समाचार के अनुसार जयपुर के सोडाला नगर में "शिव दर्शन प्रदर्शनी" का आयोजन वैकुण्ठनाथ के मन्दिर में किया गया। प्रतिदिन भक्त आत्मायें इस प्रदर्शनी से आध्यात्मिक ज्ञान लाभ प्राप्त करने आती रहीं। दोपहर में माताओं के लिए भी सतसंग के कार्यक्रम आयोजित किये गये।

बलसाड़—सेवाकेन्द्र की ओर से समाचार मिला है कि वहाँ के जेसिस क्लब के सहयोग से युवा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। क्लब के प्रेजीडेन्ट एवार्ड विजेता मशहूर कवी श्री उशनस ने इस परिषद् का दीपक प्रज्वलित कर उद्घाटन किया। उन्होंने अपने प्रवचन में कहा कि मनुष्य के चारित्रिक उत्थान का कार्य ब्र० कु० बहनें कर रहीं हैं।

अहमदाबाद खाडिया—सेवाकेन्द्र की ओर से एक स्कूल में "युवा जागृति प्रदर्शनी" तथा देवियों की चैतन्य झाँकी का आयोजन किया गया। इस प्रदर्शनी का लाभ अनेक युवक भाई बहनों ने लिया।

दिल्ली—कृष्णानगर और लक्ष्मी नगर की तरफ से शिव-जयन्ती के अवसर पर दस स्थानों पर प्रवचन माला का कार्यक्रम चला जिसमें अनेक आत्माओं को शिव सन्देश दिया गया।

इसके अलावा "शिव जयन्ती" पर अनेक सेवाकेन्द्रों से उत्साह वर्धक सेवा समाचार प्राप्त हुआ है जिसमें अकोला, डीसा, ब्रह्मपुर पाटन, दिल्ली पालम, यवतमाल, सतारा, झंझर गुड़गाँव, हिसार, आदिपुर, पानीपत, हासन सांपला, डोंबिवली, छतरपुर, बरनाला, बोकहारो, गोधरा, पटियाला, बहादुरगढ़, सुजानपुर, झाँसी, श्रीनगर, बन्द्रा, राँची, बरेली, फतेहपुर, गोवा, सिकन्दराबाद (यू० पी०) भोपाल, भुवनेश्वर, सिकन्दराबाद, शाहदरा दिल्ली, आगरा, पूना, तीन-सुखिया, मीरजापुर, राजकोट, भैरहवा (नैपाल) भंडारा, अम्बाला कैन्ट, बड़ौदा, मुजफ्फरपुर बम्बई, गोरेगाँव, भरतपुर अबोहर सम्बलपुर, अमरेली, शहडोल, चित्रकूट, जगाधरी, मुजफ्फर नगर, शिमला, विराटनगर रोपड़, नडियाड, गंगानगर, शिवसागर ग्वालियर, भंडारा, जोधपुर, मेरठ, झझर, ककोड़ दादरी, नरसिंह गढ़, सतना, विदर, रायगढ़, लखनऊ, फिरोजाबाद, पटियाला, हुबली, नलोर, बंगलोर चन्द्रपुर भावनगर, जलगाँव, जलेसर, सूरत, मोरवी इत्यादि सम्मलित हैं।

□□

जगदीश चन्द हसीजा, मुख्य सम्पादक, ब्र० कु० आत्म प्रकाश, सम्पादक, बी 9/19 कृष्णानगर, दिल्ली द्वारा सम्पादन तथा संजीव प्रिंटर्स, महिला कालोनी, गांधीनगर, दिल्ली-३१ से छपवाया, Regd. No. 10563/65-D, (E)—70